RNI No. 7127/60

डाक पंजीयन संख्या - Jaipur City / 411 2023-25

संघशक्ति

मासिक समाचार पत्रिका

वर्ष : 61 अंक : 09 प्रकाशन तिथि : 25 अगस्त कुल पृष्ठ : 36 प्रेषण तिथि : 4 सितम्बर 2024

शुल्क एक प्रति : 15/- वार्षिक : 150/- रुपये पंचवर्षीय 700/- रुपये दस वर्षीय 1300/- रुपये

राजवंस नै राखियौ स्यांम धरम मरुदेस।
बदला में राखी नहीं दो गज धर दुरगेस।।

स्वच्छ भारत
एक कदम स्वच्छता की ओर
SS KIRTEE
AN ISO 9001 : 2015 CERTIFIED COMPANY
Piping is Our Business Satisfaction is Our Goal
Mr. Surendra Singh Shekhawat
Director
Shree Ganesh Enterprises
17425
CML-8600120461
IS:12786
CML-8600120457
IS:4984
CML-8600120464
Manufacture Of:-
SS KIRTEE BRAND ISI HDPE Sprinkler Pipe
Mini Sprinkler System | HDPE Pipes & Coils For Water
SHREE GANESH ENTERPRISES
Khasra No. 315/6, 317,318, RIICO Road, Prasrampura, SKS Industrial Area
Reengus, Sikar (Rajasthan)
8209398951 surendrasinghshekhawat234@gmail.com
GANESH
HOTEL
Ganesh Singh Maharoli
Datar Singh Maharoli
Opp. Polovictory Cinema. Station Raod, Jaipur | Contact No. 9929105156

संघशक्ति

4 सितम्बर, 2024

वर्ष : 61 अंक : 09

-: सम्पादक :-

राजेन्द्र सिंह राठौड़

शुल्क – एक प्रति : 15/- रुपये, वार्षिक : 150/- रुपये, पंचवर्षीय : 700/- रुपये, दस वर्षीय : 1300/- रुपये

विषय - सूची

समाचार संक्षेप	✍	04
चलता रहे मेरा संघ	✍ श्री भगवानसिंह जी रोलसाहबसर	07
पूज्य श्री तनसिंह जी (के सम्बन्ध में)	✍ श्री चैन सिंह बैठवास	10
महायोगी श्री अरविन्द और महा कर्मयोगी....	✍ श्री अजीतसिंह धोलेरा	13
राष्ट्र नायक वीर दुर्गादास राठौड़	✍ डॉ. कमल सिंह बेमला	17
स्वाभिमानी वीरम	✍ श्री युधिष्ठिर	20
क्षमाशीलता	✍ रश्मि रामदेरिया	23
संस्कार व संस्कृति	✍ श्री पेपसिंह ''कल्लावास''	24
राजस्थानी साहित्य को समृद्ध करने वाले....	✍ श्री भंवरसिंह मांडासी	26
आदर्श और अनूठे गाँव	✍ कर्नल श्री हिम्मत सिंह	27
अपनी बात	✍	31

समाचार संक्षेप

पूज्य नारायणसिंह जी रेडा की जयन्ती

श्री क्षत्रिय युवक संघ के तृतीय संघप्रमुख पूज्य नारायणसिंह जी का जन्म 30 जुलाई सन् 1940 मंगलवार तद्नुसार श्रावण कृष्णा ग्यारस वि.सं. 1997 को हुआ था। सुजानगढ़ (जिला-चूरू) के एक छोटे से गाँव रेड़ा में उनका जन्म हुआ था। उनके पिता श्री हरीसिंहजी का परिवार एक साधारण राजपूत का परिवार था। घर में खेती के अलावा कोई आय का स्रोत नहीं था। पूज्य नारायणसिंह जी को पढ़ने के लिए बीकानेर भेजा गया। वहीं सन् 1950 में उन्होंने श्री क्षत्रिय युवक संघ का पहला शिविर किया और तब से ही श्री क्षत्रिय युवक संघ के प्रति एक लगाव दिल में पनप गया। यह लगाव बढ़ता गया और दसवीं कक्षा उत्तीर्ण कर वे नौकरी में लग गये, परन्तु जहाँ उन्हें पदस्थापित किया गया वहाँ संघ की कोई गतिविधि नहीं थी अतः वे हर छुट्टी पर बीकानेर आ जाते और संघ बन्धुओं के साथ संघ की गतिविधि में लगे रहते। शिविरों में पूज्य तनसिंहजी को भी देखा और उनके जीवन से अत्यन्त प्रभावित हुए।

सन् 1959 में हल्दीघाटी में आयोजित श्री क्षत्रिय युवक संघ के उच्च प्रशिक्षण शिविर में वे पहुँचे। वहीं उन्होंने निश्चय कर लिया कि मुझे मेरे कल्याण के लिए पूज्य तनासिंहजी के साथ ही रहना है। उन्हें समझाया गया कि घर के बड़े लड़के हो, घर की जिम्मेदारियाँ हैं, नौकरी छोड़ दोगे तो घर पर संकट की बात भी आ सकती है। पर उनका निश्चय दृढ़ था और तभी से वे तनसिंह जी के साथ ही हो लिए। ऐसा कौन कर सकता है? वही, जिसको अपने उद्देश्य की जानकारी हो और जिसकी यह पहचान जागृत हो कि मेरे जीवन को सार्थक बनाने की क्षमता किसमें है। संघ का कार्य एक सम्पूर्ण जीवन दर्शन है। इसकी कार्य पद्धति एक व्यवहारिक प्रणाली पर आधारित है। इस मार्ग पर चलने वाले पथिक को इसके समस्त सिद्धान्तों को जीवन में अवतरित करने पर स्वत: ही अग्रिम मार्ग प्रशस्त होते हैं। ऐसा सुन्दर व उपयुक्त मार्ग देने वाले महापुरुष के सान्निध्य में रहकर मैं मेरे जीवन को सार्थक बना सकता हूँ। ऐसे ही भाव से प्रेरित होकर नौकरी छोड़कर वे पूज्य तनासिंहजी के साथ ही रहने लग गये।

पूज्य तनसिंहजी के साथ रहना आसान कार्य नहीं था। जो पास रहते उनके जीवन को मांजना पूज्य तनसिंहजी अपना दायित्व मानकर उनके प्रति जो कार्य करते उस नियंत्रण को स्वीकार कर उसी तरह जीवन में चलना बड़ा मुश्किल मान कर अनेक लोग जो उनके पास रहने आए वे धीरे-धीरे वापस चले गये। पूज्य नारायणसिंहजी तो आए ही इसीलिए थे कि पूज्यश्री के सान्निध्य में, उनके बताये अनुसार चलकर अपने जीवन को सार्थक जीवन में परिवर्तित करूँ। साधारण से असाधारण बनने की यात्रा में आवश्यक है समर्पण भाव। इस युग में अक्सर लोगों से सुनने को मिलता है कि मैं अपने उद्देश्य के प्रति समर्पित हूँ। परन्तु एक निष्ठता, अनन्यता के बिना समर्पण का कोई आधार ही नहीं है। पूज्य नारायणसिंहजी ने एक निष्ठता, अनन्यता को अपने जीवन में उतारा। पूज्य तनसिंहजी ने उनके भावों को पहचाना और संघ साधना के माध्यम से जीवन को सार्थक बनाने के लिए जैसे भाव चाहिए, वैसा ही भाव पाया।

पूज्य नारायणासिंहजी ने कोई परम्परागत साधना नहीं की थी पर जीवन को सार्थक बनाने के मार्ग पर जो बढ़ता है, है तो वह साधक ही। श्री क्षत्रिय युवक संघ का कार्य स्वयं एक साधना ही है। लोग साधना में जिन नियमों, मर्यादाओं का पालन किया करते हैं वे यम, नियम आदि संघकार्य में सहज भाव से समाहित ही हैं। अत: पूज्य नारायणसिंहजी के लिए पूज्य तनसिंहजी की कृपा से व संघ

कार्य के फलस्वरूप साधना के द्वार खुल गये। पूज्य नारायणसिंहजी की योगिक साधना स्वतः शुरू हो गई। संघ को सदाचार का मार्ग तो लोग मानते हैं लेकिन यह योग का मार्ग है इसे बहुत कम लोग स्वीकारते हैं और वास्तविकता तो यह है कि स्वयंसेवक भी इसे सर्वात्मना स्वीकार नहीं करते। लेकिन पूज्य नारायणसिंहजी ने इसी मार्ग पर चलकर अपनी समस्त शक्तियों को इसी उद्देश्य के लिए एकाग्र करके अपने जीवन को सहज, सरल, संयमित एवं निरंहकारी बनाया। उनके योग मार्ग की स्थिति देखकर साथ रहने वाले भी आश्चर्य-चकित थे। उनके जीवन में एक चमत्कारिक परिवर्तन का प्रारम्भ हो गया। उनकी सभी वृतियों में कल्याणकारी परिवर्तन आ गया। स्वतः घटित होने वाली उनकी साधना बड़ी कष्टदायक थी किन्तु उसके परिणाम अत्यन्त आनन्ददायक थे। संघ की साधना को एक योग यात्रा सिद्ध कर पूज्य तनसिंहजी की संघ यात्रा की जो कल्पना थी उसे साकार किया। इसीलिए वे संघ के आदर्श साधक बन गए और सभी स्वयंसेवकों के प्रेरक बने क्योंकि उन्होंने इसी साधना मार्ग से योग की स्थिति प्राप्त की थी।

प्रतिवर्ष पूज्य नारायणसिंहजी की जयन्ती संघ क्षेत्र में अनेक जगह मनाई जाती रही है। 30 जुलाई को ही ज्यादातर जगह मनती रही है, कुछ बड़े शहरों में निकट के रविवार के दिन भी मना ली जाती है। इस वर्ष भी 30 जुलाई को तो अनेक स्थानों पर जयन्ती मनी ही, 4 अगस्त को भी अनेक जगह पूज्य नारायणसिंहजी की जयन्ती मनाई गई। संभाग स्तर, प्रांत स्तर, मंडल स्तर पर तथा अनेक जगह शाखा स्तर पर भी जयन्ती के कार्यक्रम आयोजित हुए।

जयपुर में 30 जुलाई को ही मनाई गई तथा प्रतिवर्ष की तरह सामुहिक सहभोज का भी आयोजन रहा। स्वयंसेवक, उनके परिवार तथा सहयोगी और उनके परिवार के लोग आयोजन में सम्मिलित रहे। संघप्रमुखश्री ने पूज्य नारायणसिंहजी की सांघिक यात्रा का विस्तार से वर्णन किया जो बड़ा प्रभावशाली रहा। माननीय संरक्षकश्री भी कार्यक्रम में उपास्थित रहे। कुछ अन्य समाज के लोग भी आए और व्यवस्था, अनुशासन की तो सराहना की ही, पूज्य नारायणसिंहजी के जीवन की जानकारी पाकर बड़े प्रभावित हुए।

अन्य कार्यक्रम

21 जुलाई को श्री क्षत्रिय युवक संघ के जयपुर स्थित केन्द्रीय कार्यालय संघशक्ति में गुरु पूर्णिमा मनाई गई। भारतीय परम्परा को जीवित रखने के लिए हम गुरु के महत्त्व को समझें तथा उसी के अनुरूप जीवन व्यवहार करें। संघ संरक्षक माननीय भगवानसिंहजी ने बताया कि यदि मन स्थिर नहीं है तो साधना के द्वारा उसे स्थिर किया जा सकता है। इसके लिए गीता उपयोगी शास्त्र है। गीता में इसके लिए उपाय बताया गया है- अभ्यास और वैराग्य। अभ्यास अर्थात् कार्य की बार-बार पुनरावृति करना और वैराग्य का अर्थ है राग, लगाव, आसक्ति आदि का न होना। पूज्य तनसिंहजी के साहित्य में तथा उनके जीवन में यह स्पष्ट झलकता है। कार्यक्रम में संघ स्वयंसेवकों के परिवार भी सम्मिलित रहे। कुछ स्वयंसेवक अन्य जिलों से तथा कुछ गुजरात से भी इस अवसर पर संरक्षकश्री का सान्निध्य प्राप्त करने पहुँचे। संघप्रमुखश्री भी कार्यक्रम में सम्मिलित रहे।

संघप्रमुखश्री संभागीय स्तर पर स्वयंसेवकों से मिलकर संघकार्य को उचित गति देने सम्बन्धी चर्चा करते हैं। हम हमारे सभी सांसारिक दायित्व निभायें लेकिन हमारा ध्यान रहे कि हम स्वयंसेवक संघ के हैं और संघ कार्य या संघ द्वारा दिया गया दायित्व निभाने में कोई कसर न रहे। हर कार्य करते हुए केन्द्र में संघ ही रहे। संघ समूह में हम अपना अस्तित्व समाहित कर दें। संघ समूह की एक इकाई बनकर रहें। स्वयंसेवकों में परस्पर घनिष्ठता बढे तभी समूह बलवान बनता है। इसीलिए अधिकांश संभागों में दो

दिवसीय कार्यक्रम अब तक कर चुके हैं। इसी कड़ी में 13 व 14 जुलाई को संघप्रमुखश्री मुंबई में रहे। मुंबई में कई जगह स्नेह मिलन कार्यक्रम रखे गए।

संघ कार्य निरन्तर विस्तार पा रहा है। नई-नई शाखाएँ प्रारम्भ हो रही हैं। उन नई शाखाओं के संचालन में एकरूपता आए, संघ के संदेश का भाव हर कार्यक्रम में बना रहे, इसके लिए आवश्यक है कि शाखा प्रशिक्षण के लिए शिक्षण दिया जाए। इसी हेतु नाडोल के आशापुरा माताजी मंदिर में 28 जुलाई को एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन हुआ। शाखा के कार्यक्रम, शाखा के सहयोगियों के दायित्व, शाखाओं के प्रकार आदि पर विस्तार से समझाया गया। कार्यक्रम में पाली तथा जालोर प्रांत के सहयोगी सम्मिलित हुए।

पाबूजी महाराज मंदिर गुड़ा चतुरा (सोजत मंडल) में 14 जुलाई को सामुहिक यज्ञ एवं विशेष शाखा का आयोजन रहा। इसमें गुड़ा चतुरा, केरखेड़ा, गुड़ा श्यामा, बड़ागुड़ा, रायपुर, बगड़ी शाखाओं के स्वयंसेवक व स्थानीय समाज बन्धु सम्मिलित हुए। 14 जुलाई को ही सेवाड़ा (सुरावा मंडल) स्थित खेमकरी माता मंदिर में विशेष शाखा का आयोजन रहा। 14 जुलाई को ही पोकरण क्षेत्र के महेशों की ढाणी गाँव में विशेष शाखा व सामुहिक यज्ञ का आयोजन रहा। सिवाणा दुर्ग स्थित वीरवर कल्ला रायमलोत राठौड़ के स्मारक पर सामुहिक यज्ञ माँ भगवती छात्रावास शाखा के स्वयंसेवकों द्वारा किया गया। सभी जगह श्री क्षत्रिय युवक संघ की विस्तार से चर्चा की गई।

श्री क्षात्रपुरुषार्थ फाउण्डेशन ने 20 व 21 जुलाई को श्री राम पैलेस सांदरसर में जयपुर दल की कार्यशाला सम्पन्न की। 27-28 जुलाई को भीलवाड़ा जिले की आसींद व करेड़ा तहसील की कार्यशाला आयोजित रही। 27-28 जुलाई को ही सीकर व नीमकाथाना दल ने बरसिंगपुरा गाँव में सभा रखी। सहयोग, पारिवारिक भाव, तपस्या, त्याग, स्वाभिमान आदि संस्कारों में आई कमी को दूर करने के लिए श्री क्षत्रिय युवक संघ का साधना मार्ग है। इसी के लिए युवा शक्ति को तैयार करने का कार्य क्षात्र पुरुषार्थ फाउण्डेशन कर रहा है।

कच्छ जिले में 14 जुलाई को शाम 5 बजे जुरा कैंप में सम्पर्क हेतु आयोजन रहा। रात्रि 8 बजे दरबार बोर्डिंग भुज में सम्पर्क किया गया। श्री क्षत्रिय युवक संघ की विचारधारा, गतिविधि के बारे में विस्तार से समझाया गया। नई शाखाएँ प्रारम्भ होने का आश्वासन मिला। झालावाड़ प्रान्त में शाखा वर्ष की संदेश यात्रा 11 से 14 जुलाई तक रही। सुरेन्द्रनगर, ओलक, डेरवाला, तावी, मोढवाणा व सवलाणा में यात्रा की गई और सभी जगह नई शाखा प्रारम्भ करने का दायित्व सौंपा गया। पालनपुर प्रांत में अनापुर छोटा गाँव में सम्पर्क किया और सितम्बर माह में होने वाले शिविर की जानकारी देने के लिए 20 गाँवों हेतु चार दल बनाए गये। 14 जुलाई को जाटोली चौहान में सम्पर्क कर अगस्त में एक शिविर करने का निर्णय लिया गया।

शिविर– अगस्त माह में प्राथमिक प्रशिक्षण शिविर बालकों व बालिकाओं के मिलाकर 27 निश्चित हुए थे, कुछ अब तक हो चुके शेष होने जा रहे हैं। ●

किसी लकीर को मिटाए बिना छोटी बना देने का उपाय है, बड़ी लकीर खींच देना। क्षुद्र अहमिकाओं और अर्थहीन संकीर्णताओं की क्षुद्रता सिद्ध करने के लिए तर्क और शास्त्रार्थ का मार्ग कदाचित ठीक नहीं है।

– डॉ. हजारी प्रसाद

चलता रहे मेरा संघ

(आयुवान सिंह जी के जन्म के 100वें वर्ष के प्रारम्भ में 17 अक्टूबर, 2019 को माननीय भगवानसिंह जी का उद्बोधन)

स्वर्गीय आयुवानसिंह जी से मेरा संपर्क एक-दो साल का था, और मैं ऐसा सोच सकता हूँ कि, कुछ लोग ऐसे होंगे जिनका उनसे मेरे अधिक सम्पर्क रहा है। उनकी पुस्तकें पढ़ने एवं श्री क्षत्रिय युवक संघ में उनके बारे में चर्चा सुनकर, उनके लेख पढ़कर और उनके साथ बिताए गए कुछ दिन याद करके, मैं उनके बारे में कुछ कहूँगा।

कहते हैं, प्रकृति में तीन गुण हैं- सतोगुण, रजोगुण एवं तमोगुण। आदिकाल से हैं, आज भी हैं और सदैव रहेंगे। इनमें से किसी भी गुण का नाश नहीं होगा। सतोगुण एवं तमोगुण, नदी के दो किनारे हैं। किनारे न कहीं आते हैं, और न कहीं जाते हैं, क्योंकि नदी स्वयं बहती रहती है। इसी प्रकार सतोगुण एवं तमोगुण सदैव निष्क्रिय रहते हैं, सक्रिय रहता है-रजोगुण। ज्यों ही रजोगुण, सतोगुण की ओर उन्मुख होता है, तो एक विशिष्ट शक्ति का निर्माण होता है, जिसे दैवीय शक्ति कहते हैं, और ज्यों ही यही रजोगुण, तमोगुण के साथ मेल कर लेता है, तब राक्षस वृत्ति का निर्माण होता है।

आयुवानसिंह जी के बारे में जो सुना, पढ़ा और देखा, मुझे लगता है, वे रजोगुण के प्रतीक थे। जहाँ इच्छा है और क्रिया है। जहाँ इच्छा होती है, वहीं क्रिया होती है। और उनका पूरा जीवन इच्छा और क्रिया का प्रतीक बन गया। आयुवानसिंह जी के जीवन के बारे में, जो हमारे पास लिखा हुआ है, या हमने पढ़ा और सुना है, उसके बारे में विस्तार से आपको बताया गया, और यह भी बताया गया कि इस शताब्दी वर्ष में कौन-कौन से कार्यक्रमों का आयोजन होगा। संघ के साहित्य के साथ-साथ उनके साहित्य को भी जन-जन तक पहुँचाने का कार्यक्रम रहेगा। एक पुस्तक का नाम आया जरूर, लेकिन उसके बारे में अधिक बात नहीं हुई। 'राजपूत और भविष्य।' मैंने कई बार पढ़ी है, और अब मैं अनुभव करता हूँ, क्षत्रिय युवाओं को यह पुस्तक अवश्य पढ़नी चाहिए। जब श्री क्षत्रिय युवक संघ प्रारम्भ हुआ था, देश की परिस्थितियाँ भिन्न थीं। हमारे समाज की परिस्थितियाँ भिन्न थीं। गुलामी का इतना प्रभाव था, कि हमारे शासकों के नीचे झुक-झुक के, हमने उनके कदमों की धूल चूम ली। हम झुके ही रहे। पांच-सात दिन पहले बंगाल के गवर्नर यहाँ आए थे, वे झुके हुए से दिख रहे थे। मैंने उनको पूछा, ''आप इतने झुक क्यों गए हैं?' कहा,-'मी लॉर्ड, मी लॉर्ड बोलते बोलते मेरी कमर ही टेढ़ी हो गई।'' और हमने भी ऐसा ही किया। ऐसी स्थिति में इस कौम में प्राण फूंकना, इस कौम के माध्यम से पूरे भारतवर्ष में जागृति लाना और भारतवर्ष के माध्यम से पूरे संसार में, मानवता में, प्राणीमात्र के लिए क्षत्रिय का जीवन कैसा होता है, ऐसे संस्कारों का सींचन कर, लोगों को मार्ग दिखाना है।

कुछ लोग क्षत्रिय नाम से चिढ़ते हैं, क्षत्रिय संगठन से चिढ़ते हैं, और इसको संकुचित बताते हैं। पूज्य तनसिंह जी ने एक जगह लिखा है, नादान लोग इस प्रकार की बात करते हैं। क्षत्रिय का जीवन, खुद के लिए है ही नहीं, है औरों के लिए, तो संकुचितता कैसी। न कोई संप्रदाय की बात है, न जाति की और किसी देश के टुकड़े की। न केवल मानवता की, बल्कि प्राणीमात्र के लिए जीने वाला यह क्षत्रिय, और उसी के लिए बनाया गया यह संगठन। पूज्य तनसिंह जी और पूज्य आयुवानसिंह जी ने जिस प्रकार एक मजबूत नींव डाली है, अभी 73वां वर्ष संघ का चल रहा है। 73 वर्ष समाज के लिए कोई बड़ा समय नहीं, व्यक्ति के लिए बड़ा है। आयुवानसिंह जी तो 50 को भी पार नहीं कर सके। इसके पहले ही उनको जो करना था, करके चले गए। उनकी स्मृति हमारे पास शेष है। ऐसे लोग, जो संसार के लिए करते हैं, किसी अकेली जाति के

लिए, अकेले देश के लिए नहीं, किसी अकेले संप्रदाय के लिए नहीं। संपूर्ण मानव जाति और प्राणीमात्र के लिये जो करता है, उनको याद करने, उनकी जयन्ति मनाने की सार्थकता है। और उस पर भी आयुवानसिंह जी की जयन्ति चाहे छोटे रूप में हो, बड़े रूप में हो, शाखा स्थल पर हो, शिविर में हो, कई बार शिविर में आ ही जाती है, तो वहाँ भी मनाते हैं। उनका स्मरण किया जाता रहा है, और वो जो रजोशक्ति है, रजोगुण है, वह यदि राजपूत के हाथ से निकल जाए, उसके जीवन से निकल जाए, तो राजपूत, राजपूत ही नहीं रहता। दुकानों में सजाए कार्टून के अन्दर कुछ सामान होता है। लेकिन वह सामान निकाल लिया जाए, और कार्टून पड़ा रहे, तो कोरी जगह ही रोकता है।

तो हमारे साथ भी कुछ इस तरह की घटनाएँ घटी। हजारों सालों तक लड़ते-लड़ते थकान भी आती है, लेकिन इस कौम में थकान नहीं आई, पर रूप बदलता गया। महाभारत के पहले भी युद्ध हुए, और उसको भी क्षत्रिय काल ही कहा गया। महाभारत के बाद स्वर्णिम माना जाता है, गुप्त काल को। यह तो कलयुग की बात है, उसमें भी यह रजशक्ति समाप्त नहीं हुई। लेकिन रज के साथ जब तक सत रहा, या सत के साथ जब तक रज रहा, तब तक क्षत्रिय में विकृतियाँ नहीं आईं। और जब से विकृतियाँ आनी प्रारम्भ हुई, तमोगुण ने हमारे ऊपर प्रभाव छोड़ दिया है, और इसके कारण हम में से बहुत सारे लोग तो ऐसे हैं, कि कहते हैं क्या पुरानी बातें करते हो, गुमराह लोग हैं।

पूज्य तनसिंहजी ने लिखा है, 'गुमराह हठीलों के प्रांगण में, मैं अलख जगाने आया हूँ।' तो तनसिंहजी एवं आयुवानसिंह जी के जीवन की कोई तुलना नहीं है। बहुत समय तक साथ रहे उनका पत्र व्यवहार अभी भी फाइलों में पड़ा है। वो देख करके अनुमान लगाया जा सकता है। कुछ लोगों को विरोधाभास दिखाई पड़ता था, वो कुछ सीमा तक रहा होगा, लेकिन आत्मीयता कितनी थी उनकी आपस की, उस बात को याद दिलाना बहुत जरूरी है। हमारा जहाँ-जहाँ क्षत्रिय युवक संघ का कार्यक्षेत्र है, इस बात को विस्तार से बताया जाना चाहिए। इस वर्तमान युग में, राजपूतों को, क्षत्रियों को मार्ग दिखाने का जो कार्य इन्होंने किया, वो अद्भुत था, विलक्षण था। उम्र उन लोगों ने कम पाई लेकिन कम उम्र में भी उन लोगों ने वह कार्य कर दिया, जिसके लिये आज भी हम उन्हें याद कर रहे हैं। 100वां वर्ष प्रारम्भ हुआ है, 'राजपूत और भविष्य' को पूरे समाज में पहुँचाने का कार्य, हम जो यहाँ उपस्थित हैं, इस बात का संदेश जहाँ भी जाए, क्षत्रिय युवक संघ उन सबसे इस कार्य में सहयोग करने की अपेक्षा करता है। उस पुस्तक के कुछ पन्ने मैंने आज भी पढ़े, तो मुझे लगता है, विभिन्न प्रकार की प्रतिभाएँ आयुवानसिंह जी में थीं। उन प्रतिभाओं का, उन विशेषताओं का प्रगटीकरण होने में थोड़ी कंजूसी रही, उन्हें समय नहीं मिला।

योजनाएँ उनकी पहले से थीं। आयोजन कर, योजना बनाना, उनका अद्भुत गुण था। ऐसे योजना बनाने वाले राजपूत समाज में, वर्तमान में इस युग में, इस शताब्दी में ऐसा कोई नहीं हुआ।

पूज्य तनसिंहजी ने सिल्वर जुबली में विशेष लेख में लिखा है, कि इस कौम को, इस देश को जो आगे ले जाने वाले होंगे, उनमें क्षत्रिय युवक संघ अग्रिम पंक्ति में होगा। मैं आपको कैसे याद दिलाऊँ, पिछले 20-25 वर्ष का मेरा अनुभव कहता है, मैं कहूंगा तो छोटे मुँह बड़ी बात लगेगी, लेकिन इसके सिवाय कोई चारा नहीं है। आज इस कार्य की महत्ती आवश्यकता है, और पहले भी रही है। जो उन्होंने हमको मार्ग बताया और आयुवानसिंह जी की जो प्रतिभाएँ हैं, उनके लिये विभिन्न प्रकार के प्रकल्प, छोटे-छोटे संगठन हमको बनाने चाहिए। यह आवश्यक नहीं कि उसमें सभी क्षत्रिय युवक संघ में आने वाले लोग ही हों लेकिन समाज में ऐसी बहुत सारी प्रतिभाएँ छिपी पड़ीं हैं जो समाज के काम आ सकती हैं। सभी की सीमाएँ, क्षणमताएँ, अलग-अलग होती हैं, वो अब प्रकट होने लगी हैं। राजनीति में भी, भारत की अर्थ व्यवस्था में भी, ज्ञान के मार्ग में भी। उनको खोज-खोज

करके कोशिश करें, कि ऐसे अनेक संगठन बनाए जाएँ। क्योंकि जमाना, आज का जो युग है, वैसे तो कभी कमजोर का नहीं रहा, लेकिन जो आपा-धापी का युग चल रहा है, कौन कहाँ जा रहे हैं, यह उनको खुद को पता नहीं है, और जिनको पता नहीं है, वे भी अपने आपको पायनियर बताते हैं। अनेकों संगठन खड़े हो गए हैं, मैं कहता हूँ, उनकी भी आवश्यकता है। अनेकों संगठन हैं, अपने-अपने क्षेत्र में काम करने वाले, जिनकी जैसी प्रतिभा है, वो काम करें, और जो अभी चल रहे हैं, उनसे भी अधिक संगठनों की जरूरत है। क्षत्रिय युवक संघ अपना काम करता रहेगा, क्योंकि वह जो आधार भूमि है, उसी से निकलेगा उन सभी संगठनों का भोजन, पानी। वही उनके लिए प्राण होंगे। आज हम आयुवानसिंह जी की जो जयन्ति मना रहे हैं, एक साल तक चलने वाले विभिन्न कार्यक्रमों की जो सूचना दी गई है, मैं उसमें एक और जोड़ना चाहता हूँ। जो अभी बताया, उसमें नहीं आया था, कि 100वां वर्ष चल रहा है, तो कम से कम 100 जगहों पर ऐसे बड़े कार्यक्रम किए जाएँ। जैसे पहले बताया गया कि आयुवानसिंह जी की पुस्तक 'मेरी साधना' को लगभग सभी शाखाओं में आवश्यक रूप से पूरी की जाए, ऐसे ही कम से कम 100 आयोजन हों।

अब यह श्री क्षत्रिय युवक संघ पर निर्भर करता है कि किस प्रकार करेंगे। अभी बैठे-बैठे ही मेरे यह विचार आया कि यह बात भी आपके सामने प्रकट करूँ कि कम से कम 100 जगह पर ऐसे कार्यक्रम हों, और यह संभव हो तो अगली साल अक्टूबर में एक बड़ा कार्यक्रम कहीं भी किया जाए और बहुसंख्यक लोग क्षत्रिय युवक संघ को जानें। आयुवानसिंह जी को जानें। वे ही प्राण फूंकने वाले और प्राण फूंकने वाले को जब हम भूल जाते हैं, तो मूल खो जाता है। जड़ ही नहीं है, तो पत्ते क्या करेंगे। इसी प्रकार हमें आयुवानसिंह जी की जड़ को पकड़े रखकर आगे बढ़ना है।

अभी संघ को 73 साल हुए हैं। यह इसका बाल्यकाल है। एक पौधे के बीज से अंकुरण होकर नव पल्लव आ रहे हैं। इसके बाद में इसकी डालियाँ बनेंगी, फूल लगेंगे, फल लगेंगे, विशाल वटवृक्ष होगा। लेकिन बीज डाला जा चुका है। अब इसमें हम किसी प्रकार की कौताही बरतेंगे, तो हम कृतघ्न कहलाएँगे। जिन्होंने इस प्रकार का बीज डाला है, अपने जीवन के खून-पसीने से सींचा है, कठिनाईयों में तपस्या करके, उनके प्रति कौताही हमारा विश्वासघात होगा। हमारे ऊपर उन्होंने कितना विश्वास किया, तो हमें उनको विश्वास दिलाना चाहिए। उन्हीं के रूप में आप सब लोग यहाँ विराजमान हैं, हमको यह विश्वास दिलाएँ, कि जो हमारे सपने हैं, उनको पूरा करने में किसी प्रकार की कमी नहीं रखेंगे।

प्रारम्भ में श्री क्षत्रिय युवक संघ शेखावाटी से प्रारम्भ हुआ। बीज पड़ा था, पिलानी में, वो भी शेखावाटी में। शाखाएँ फैली यहाँ, और फिर धीरे-धीरे आगे बढ़ता-बढ़ता 1957 तक पूरे राजस्थान में फैल गया था। जितना कर सकते थे, पूरा हुआ। 55 में जब भूस्वामी आंदोलन हुआ था, उसमें गुजरात से भी कुछ लोग आए, कि राजस्थान में इतना बड़ा आंदोलन हो रहा है, उसमें हमारा भी सहयोग होना चाहिए, और उसे देख करके बोले, कि हम भी आपका काम देखना चाहते हैं, तो मेड़ता सिटी में एक शिविर लगा, उस शिविर में उनको आमंत्रित किया गया। और उस शिविर में उन गुजरात वालों ने निश्चय किया, जिसमें हरिसिंह जी गोहिल व और भी कई लोग थे, इसका प्रारम्भ हमारे यहाँ भी करो, इसकी परम आवश्यकता है। आयुवानसिंह जी वे पहले व्यक्ति थे, भावनगर में आईटीसी लगा, उसमें जाकर संघ की स्थापना गुजरात में की।

उनकी एक और विलक्षणता मुझे याद आ रही है, कि गरीब से गरीब व्यक्ति से लेकर राजा-महाराजाओं तक

(शेष पृष्ठ 16 पर)

पूज्य श्री तनसिंह जी (के सम्बन्ध में)

''जो कुछ देखा, समझा व अनुभव किया''

– चैनसिंह बैठवास

व्यक्ति साधारण हो या असाधारण उलझन सबके जीवन में आती है। व्यक्ति के सामने जब उलझन आ खड़ी होती है तो वह पशोपेश में पड़ जाता है – क्या करूं, क्या न करूं, क्या उचित है, क्या अनुचित है– इस उलझन में रहता है। चिन्तन-मनन व अपने विवेक बुद्धि से उसे रास्ता निकालना होता है।

पूज्य श्री तनसिंह जी के जीवन में न जाने कितनी उलझनें आईं होगी, उन सबको स्मरण रखना कितना कठिन है, फिर भी कुछ अवसर तो भुलाये ही नहीं भूले जाते। ऐसे ही कुछ अवसर पूज्य श्री के जीवन में भी आये हैं जिन्हें भुलाया नहीं जा सकता। उलझनों के प्रति उनका स्वयं का विचार क्या था, यह भी जानें।

पूज्य श्री तनसिंह जी उच्च शिक्षा पाने के लिए पिलानी तो गये, पर उनके सामने भारी अर्थसंकट था। उनके दो और साथी जो इनके साथ थे– प्रेमसिंह जी नान्दड़ा व कमलकान्त सिंह जी, ये दोनों भी अर्थसंकट से ग्रसित थे। ये तीनों मित्रत्व भाव वाले अर्थभाव से जूझ रहे थे। अर्थसंकट की वजह से छात्रावास में हाथ से ही रोटी बनाया करते थे क्योंकि रसोइये के खर्च से चलाया जाने वाला मैस इनके लिए महंगा था।

पूज्य श्री तनसिंह जी उदारवृति के थे। उनके मन में अपने साथियों के प्रति सहानुभूति थी, इसलिए अपने व अपने सहपाठियों के अर्थाभाव को दूर करने के लिए उन्होंने वहाँ वाचनालय में नौकरी कर पैसे कमाये, दातून बेचकर पैसे इकट्ठे किये, खेती के लिए चौदह क्यारियाँ ली और उनमें साग-सब्जी लगाकर उन्हें बेचा, रात्रि के समय दर्जी की दुकान पर सिलाई कर पैसे कमाये, फिर भी पैसों की कमी पड़ती थी। अपनों के प्रति उनकी इतनी हमदर्दी कि अपने को मिलने वाली मासिक छात्रवृति के तीन रुपये भी वे कमलकान्त सिंह जी को देते और उन्हें बताते कि यह छात्रवृति एक धनी मित्र का गुप्त दान है।

पूज्य श्री तनसिंह जी ने अपनी आपबीती सुनाते हुए कहा–

''इसी गौरवमयी सदावृत संस्थान के छात्रावास में रहते मैंने अपनों के जीवन की दर्दभरी दास्तान का श्रवण किया। धन की कठिनाई को मैं शुरू से देख रहा था, **पर स्वयं कमाकर भी मैं धन की कमी अनुभव करता था।** हम तीन साथी खास बन्धु-भाव रखते थे क्योंकि हम तीनों पूरे धनहीन थे। अपने बन्धुओं की सेवा में खपकर कुछ भी बचता नहीं था। दैन्य की तो हम पर बड़ी कृपा रहती थी, इसलिए आवश्यकताएँ भूखी ही रहती थी।''

पूज्य श्री तनसिंहजी के जीवन में न जाने कितनी उलझनें आई होगी, कुछेक का यहाँ थोड़ा-सा उल्लेख उन्होंने किया, उन्हीं की जुबानी–

''वैसे तो इस जीवन में न जाने तुम कितनी ही बार आई होगी, फिर भी थोड़ा-सा उल्लेख कर दूँ। हम तीन खास बन्धुभाव रखने वालों में एक के माता-पिता का देहान्त हो गया। अपने साथी के लिए कमाने की जरूरत आ गई और यह भी जरूरत आ गई कि पढाई छोड़ दूँ। उसकी पढाई के लिए मैंने नौकरी करने की ठान ली, पर छात्रावास के गृहपति ने मुझे सलाह दी कि पढ़ाई का तीसरा वर्ष मैं पूर्ण कर चुका और अब केवल एक ही वर्ष था– बी.ए. में, इसलिए मुझे बी.ए. कर लेना चाहिए। उसने मुझे हिम्मत बंधाई और आर्थिक संकट के लिए सान्त्वना दी। उसके साथ ही प्रश्न था उस साथी की अपंग पक्षाघात से पीड़ित बहन का वरण करना। और वह चिन्तित था कि उसके लिए कोई वर नहीं था। सहानुभूति से मेरा हृदय भर आया। मन ही मन निश्चय कर लिया, मैं उसी से शादी कर लूंगा, पर दूसरे साथी ने मुझे मना कर दिया, कहा– 'हमारी जिन्दगी को इस प्रकार बर्बाद करने का हमें कोई हक नहीं है, यह जिन्दगी हमारी ही नहीं है और न इस पर हमारा एकाधिकार है। यह तो धरोहर है,

जिसे ठीक प्रकार रखना हमारा फर्ज है। उस समय तुम (उलझन) बहुत गहरी थी। दो बड़े सिद्धान्तों के बीच टक्कर थी। साथी के लिए मैं त्याग करूँ या न करूँ? न करूँ तो कायर हूँ और न करने का कारण भी नजर नहीं आता था। स्वार्थ को मृत्यु मानता हूँ। दुनिया कुछ भी कहे लेकिन मेरी प्यारी साक्षी उलझन तुम जानती हो कि अपने स्वार्थ के लिए मैंने किसी का गला घोंटना तो दूर रहा, किसी का अहित भी नहीं किया। पर मामला स्वार्थ का नहीं था। एक ओर एक साथी की आवश्यकताओं का तकाजा था और दूसरी ओर एक साथी का वाक्य था– 'यह जीवन कितने लोगों की धरोहर है, उसे बिना सोचे किसी एक के लिए समर्पित कर देना कहाँ तक उचित है।' तुम जानती हो, उस दिन मैंने पहली बार समाज चरित्र की भाषा में सोचा और बिना पढ़ाई छोड़े भी यथाशक्ति सहायता करता रहा।

''पर उलझन! तुम्हारी मुसीबत तो यह है कि एक समस्या को पार करने के बाद तुम बड़ी समस्या को लाकर खड़ी कर देती हो। यही तो बात है जिसके कारण एक समय खरा उतरने वाला और सोने-सा शुद्ध व्यक्ति भी दूसरे समय खोटा और कथीर जैसा प्रगट हो जाता है।''

जीवन में उलझन की कितनी महत्ता है, को दर्शाते हुए पूज्य श्री तनसिंह जी ने जो कहा, उन्हीं की जुबानी–

'' व्यक्तियों की पहचान के लिए ही नहीं, आत्मचिन्तन के लिए भी तुम्हारी कितनी आवश्यकता है? दुष्ट होकर भी तुम कितनी सहायक प्रेरक और मार्ग द्रष्टा बन जाती हो।

''मेरे जीवन में जब कभी तुम आती हो, परेशान तो जरूर करती हो, पर नए सिद्धान्त और विचार को जन्म देती हो अथवा किसी क्षीण, जर्जर और मृत प्राय उपेक्षित विचार को पुनर्जीवन प्रदान करती हो।

''खैर कुछ भी हो, मुझे अपनी उलझनों से कोई उलझन नहीं है, मैं उन्हें पसन्द करता हूँ। तुम न हो तो जीवन में कोई रस और सार नहीं है। जीवन ताल और लय खो देता है। तुम्हें पार करने में मैं पुरुषार्थ के दर्शन करता हूँ और इसीलिए मैं बिना उलझनों के व्यक्ति की अपेक्षा उलझनों वाले व्यक्ति को अधिक पसन्द करता हूँ। अच्छे और बुरे के बीच संघर्ष में से गुजरता हूँ। जो ऐसे संघर्ष में गुजरता है, उसका विवेक खरा सोना बनेगा और वही विकासोन्मुख है। जो पड़ा रहेगा उसे क्या उलझन आयेगी?

''एक बार तुम जिस क्षेत्र से निकल गई, उस क्षेत्र को विश्वस्त बना दिया। फिर दुबारा उस पर किसी प्रकार के विचार विनिमय की आवश्यकता नहीं रहती। इसीलिए तुमने मेरे अनेक विचारों को स्थिरता प्रदान की है और मेरे व्यक्तित्व और स्वभाव को आकार प्रदान किया है। प्रारम्भ में जब तुम किसी क्षेत्र में प्रवेश करती हो तो उस क्षेत्र से भयंकर अरुचि होती है लेकिन धीरे-धीरे विचार के बाद जब स्वस्थ बनता हूँ, तब देखता हूँ कि मेरी श्रद्धा पहले से अधिक धीर और गम्भीर बनी है तथा मेरी अभीप्सा उत्तरोतर शुद्ध बनी है।

''अपने लम्बे जीवन पर विहंगम दृष्टि डाल कर जब पुनरावलोकन करता हूँ तो लगता है, तुमने मुझे उत्तरोतर अच्छा बनाया है। तुम्हारी उपस्थिति ने मुझे चिन्तनशील बनाया है, पर अभी समझ नहीं पाया कि तुम क्यों आती हो और किसकी भेजी हुई हो? आभास होता है कि तुम परमेश्वर द्वारा भेजी जाती हो और मुझे अपने मार्ग चिन्तन और विचार करने के लिये प्रेरित करती हो। भला परमेश्वर की भेजी हुई होने पर तुम्हारा मैं निरादर कर ही कैसे सकता हूँ? फिर उसका उद्देश्य मेरा हित है तब तो तुम्हारा मैं स्वागत करता हूँ।''

पूज्य श्री तनसिंह जी की क्या उलझन है, क्या वे स्वयं उलझन हैं, उन्हीं की जुबानी –

''मेरी अपनी कमियाँ हैं। सबसे बड़ी कमी है– मन, वचन, कर्म से अपने आपके प्रति सच्चा होना। जो मेरा उद्देश्य है, उस मैं सर्वात्मना अपना मानता हूँ। मेरी जो साधना है उसे मैं सम्पूर्ण जीवन और व्यक्तित्व से समर्थन देता हूँ। मेरा जो साथी है, उसे एक बार अन्तर में जगह देने के बाद बाहर निकाल फेंकने को जी नहीं चाहता। आज की दुनिया बहुत अधिक व्यावहारिक हो गई है, मगर मेरी उलझन यह है कि मैं उसे अन्त तक छोड़ नहीं सकता।

''वैसे उलझन! मैं खुद एक जीती जागती उलझन हूँ। जिस किसी के जीवन में प्रवेश करता हूँ, उसे झकझोर डालता हूँ। जो कुछ उसका होता है, सबसे पहले उसी से उसी को मुक्त कराने की चेष्टा करता हूँ। इस क्रिया में बड़े-बड़े भागीरथ गंगा बनकर बह गए और जा गिरे क्षार के सागर में।

''पर मैं इतनी बड़ी उलझन नहीं हूँ, जितनी कि लोग कल्पना कर लेते हैं। मेरे कुछ गुर और सिद्धान्त हैं। उनके कारण मेरा आशुतोष स्वभाव भी है, पर जिसने आँखें ही नहीं खोली, वह क्या देखेगा। मैंने तो देखा है इस दुनिया में अधिकांश लोग 10 वर्ष की और 12 वर्ष की मानसिक आयु से बड़े नहीं हैं, वे मेरी क्या जाँच करेंगे। थोड़ा पाकर झट से प्रमाण-पत्र खिसका देते हैं जैसे जीवन के विश्वविद्यालय के वे ही सनातन उप कुलपति हों।

''मेरी कही हुई बातों को जो पकड़ लेता है, उन पर आचरण कर लेता है, बस मैं उसी के आधीन हो जाता हूँ। छोटी-छोटी बातों को ही देखा करता हूँ। लोग बड़ी बातों में महापुरुष बनाना ज्यादा पसन्द करते हैं लेकिन वे मेरी छोटी-छोटी बातों की प्राथमिक पाठशाला में भी अनुत्तीर्ण हो जाते हैं। अतः मैं उलझन तो इतनी बड़ी नहीं हूँ, पर मामूली भी नहीं हूँ।

''मेरी पैदा की हुई उलझनें भी कोई बहुत बड़ी उलझनें नहीं होती। उन्हीं उलझनों का उत्तर उसने पहले अवश्य दिया होगा किन्तु वे सभी उत्तर शाब्दिक थे। मुझे शब्दों से क्या लेना है? मैं खुद भी इसका पूर्ण मितव्ययी हूँ। मैं तो चाहता हूँ कि शब्दों की अपेक्षा लोग कार्यों से प्रगट हों। जो लोग अपने कार्यों में अपनी उपलब्धियों को प्रकट कर पाते हैं, उनके लिये फिर कभी वैसी कोई उलझन नहीं आती।

उलझन कभी आयी मैंने जानी नहीं
ज्ञानी जन की बात कभी मानी नहीं
गाने को गीत दो बची खुची प्रीत दो
आता हूँ यहीं बस दौड़ के।

''मेरे प्रति पूर्वाग्रह और धारणाएँ बना लेने वालों को मैं दया की दृष्टि से देखता हूँ, क्योंकि मैं कभी पूर्व धारणाओं और आग्रहों की दासता को अंगीकार नहीं करता। कुछ लोग मुझे निपट स्वार्थी मानते हैं, पर मेरी उदारता ही अनेक बार उलझनें पैदा करती है। मैं संकुचित हूँ पर मेरी महानता ही बहुत बार उलझन पैदा करती है।''

प्रकृति भी उलझनें पैदा करती है। इस सम्बन्ध में पूज्य श्री तनसिंह जी ने जो कहा, उन्हीं की जुबानी-

''कुछ प्रकृति भी उलझनें पैदा करती है और उनका निवारण व्यक्ति को खुद को ही करना चाहिए। मैंने देखा है कि ऐसे मामलों में जहाँ मैंने मोह अथवा आयाचित कृपावश जिन लोगों को उनकी प्राकृतिक उलझनों का सामना करने में सहायता दी है, वे सदैव परमुखापेक्षी ही बने रहे हैं। उन्होंने शक्ति पाकर भी कभी अपनी शक्ति का वास्तविक उपयोग नहीं किया। अतः प्राकृतिक उलझनों को तो व्यक्ति को खुद को ही पार करनी चाहिए। मुख्य कारण यह भी है कि जितनी प्राकृतिक उलझन आती है, उनका गहरा सम्बन्ध व्यक्ति की निजी प्रकृति से होता है। उलझनों का आगमन व्यक्ति के भीतरी संसार के निमंत्रण पर ही होता है अतः यह उसी का निजी मामला है और उसमें किसी को दखल भी नहीं देना चाहिए। कुछ गुण ऐसे हैं, जो तुम्हें जन्म दे देते हैं, मेरे कुछ अवगुण भी ऐसे हैं, जो तुम्हें जन्म दे देते हैं। गुण और अवगुणों का पारस्परिक संघर्ष स्वाभाविक है तो तुम्हारी उत्पत्ति भी स्वाभाविक है, उससे कैसे मुक्ति पाई जा सकती है।

''जिस दिन मैं इस दुनिया में नहीं रहूँगा, केवल उसी दिन तुम हमेशा के लिए विदा लोगी। तब तो तुम मेरी जीवन सहचरी हो। जो लोग मेरे कारण उलझनों से सामना करते हैं, वे देखेंगे कि मेरी अनुपस्थिति में उनकी उलझनें कितनी अधिक पेचीदी हो गई हैं, पर हमें तो पीछे रहने वालों से प्रयोजन नहीं है। जो बीत चुका है उससे भी कोई प्रयोजन नहीं, केवल उसी से प्रयोजन है जो आज हमारे साथ है। आज तुम मेरे और मैं तुम्हारे साथ हूँ। यह साथ जीवन पर्यन्त रहेगा, फिर क्या हिचक और क्या डर है।''

(क्रमशः)

गतांक से आगे

महायोगी श्री अरविन्द और महा कर्मयोगी पूज्य तनसिंह जी

– श्री अजीतसिंह धोलेरा

दुर्घटनाएँ :

लगभग समान प्रकार की दुर्घटनाओं का श्री अरविन्द और पूज्य तनसिंह जी शिकार हुए थे। दोनों की गिरने से हड्डियाँ टूट गई थी।

हुआ यह कि श्री अरविन्द एक रात को बाथरूम जाने के लिए उठे थे। यकायक पाँव किसी चीज से टकरा गया और आपश्री गिर गये। गिरने से उठी आवाज से बगल के कमरे में सो रही श्री माताश्री जग गई और श्री अरविन्द के कमरे में आकर देखा तो श्री अरविन्द फर्श पर पड़े थे। उनका पाँव मुड़ गया था। माताजी ने तुरन्त आश्रम में रह रहे एक डाक्टर को बुलाया। डॉक्टर ने देखा कि श्री अरविन्द के दायें जंघा की हड्डी टूट गई थी। ऐसी दुर्घटनाओं के बारे में बाद में श्री अरविन्द ने बताया था कि बीमारी और मृत्यु को वश करने पर भी दुर्घटनाओं की संभावना रहती है।

जांघ की टूटी हड्डी के टुकड़े सौभाग्य से एक दूसरे से जुड़ गये थे, अतः शल्य चिकित्सा की आवश्यकता न रही और पांव को प्लास्टर में रखकर लकड़ी की पट्टियाँ बांध दी गई थी। श्री अरविन्द को कुछ सप्ताह तक बिस्तर में ही सोते रहने की सलाह दी गई थी। श्री माताजी ने श्री अरविन्द की सभी आवश्यक संभाल का दायित्व अपने पर ले लिया था।

परिणाम– पिछले बारह साल की एकान्तवास में हो रही साधना में रुकावट आ गई। डॉक्टर लोगों और उनके सहयोगी गण को श्री अरविन्द को दवाई व सलाह देने के लिए आपश्री के कमरे में आना-जाना पड़ता था। श्री अरविन्द को इसीलिए अपनी दिनचर्या भी बदलनी पड़ी थी। घूमना तो दूर रहा बिस्तर में बैठने की भी मनाई थी। स्नान की जगह स्पंजबाथ से काम चलाना पड़ता था। पीठ पर सीधे सोते रहने से पीठ की चमड़ी लाल और कोमल हो हो गई थी। खून के कुछ बिन्दू भी दिखते थे। स्पंजबाथ के बाद पावडर छिटकाते थे। भोजन की मात्रा कम कर दी थी। प्रवाही खुराक से पेट भरा जाता था। चाय भी बन्द कर दी गई थी।

शाम को आश्रमवासी श्री अरविन्द के कमरे में सत्संग के लिए आते थे। श्री अरविन्द मन्द स्वर में बात करते थे। लगभग दो माह तक पाँव प्लास्टर में रखा गया था। श्री अरविन्द की साधना सोते-सोते ही चलती थी। साधना में इससे मंदता आ गई थी। आपश्री ने इस पर एक बार कहा था कि ऐसी स्थिति में शरीर आध्यात्मिक शक्ति के उत्थान से लगते धक्के को सहन नहीं कर सकता। यह शरीर की तामसी स्थिति है। ऐसी स्थिति में सरलता से हो सके उतनी ही साधना करनी पड़ती है। जल्दबाजी या हठधर्मी से नुकसान होने का डर रहता है। कुछ नहीं करने के प्रमाद-वश पड़े रहने की इच्छा होती है।

प्लास्टर छोड़ने पर पाँव सूज कर दो गुना मोटा हो गया था। मालिश व गर्म-ठण्डे सेक से सूजन तो उतर गई मगर पाँव अभी मुड़ता नहीं था। अतः चल नहीं सकते थे। अपने सेवकों का सहारा लेकर थोड़ा-थोड़ा चलना शुरू किया था। कई महिनों बाद पूर्ववत रूप से चल सके थे।

पूज्य तनसिंहजी के दोनों हाथों की कलाइयाँ टूट गई थी। हुआ यह था कि पूज्यश्री के मकान की चुनाई हो रही थी। वे छत देखने के लिए ऊपर चढे। वापस उतरते समय सीढी फिसल गई और वे नीचे गिर पड़े। हथेलियों के बल पड़े जिससे दोनों हाथों की कलाइयाँ टूट गई। दोनों हाथ प्लास्टर में बंध गये थे। अतः हाथों से होने वाली कोई भी

क्रिया करना संभव नहीं था। उन्हीं क्रियाओं को करने का दायित्व श्री नारायणसिंह जी रेड़ा ने संभाला था।

पूज्यश्री के एक जानकार ने आगाह किया था कि इन दिनों आप कहीं बाहर न जाएँ। कुछ अशुभ इशारे हो रहे हैं। हालांकि कहीं बाहर तो नहीं गये मगर जो होना था, होकर ही रहा।

श्री अरविन्द की तरह ही पूज्यश्री के दैनिक क्रियाकलाप में बड़ा व्यवधान आ गया था। बाहर जाना बन्द हो गया। वकालत का काम करना, लिखना आदि सब ठप्प हो गया था। श्री क्षत्रिय युवक संघ की साधना में बाधा उत्पन्न हो गई। दर्द के कारण माँ काली की पूजा, यज्ञ, माला आदि धार्मिक क्रिया व आध्यात्मिक साधना में बाधा आ रही थी। रोज दिन में अत्यधिक कर्म में लगे रहने में अब पूरी बाधा उत्पन्न हो गई थी।

बीमारी व देहावसान :

श्री अरविन्द व पूज्य तनसिंहजी जैसे उच्च कक्षा के साधक स्वाभाविक मौत से अर्थात् वृद्धावस्था व अशक्ति के कारण इस संसार से विदा नहीं होते।

श्री अरविन्द ने कहा था कि केवल जीवलेवा दुर्घटना, विष या इच्छामृत्यु ही मेरे जीवन का अन्त कर सकती है। आपश्री ने देह का त्याग कर देने का संकल्प इसलिए कर लिया था कि जिस तरह स्वर्ग से गंगा के पृथ्वी पर उतरने के वेग को झेलने के लिए शंकर जैसे सक्षम-समर्थ आधार चाहिए, उसी तरह अतिमनस चेतना को उतारने के लिए समर्थ आधार की आवश्यकता रहती है। श्री अरविन्द अतिमानस शक्ति के अवरोहण के लिए अपने तपोपूत शरीर को आधार बनाना चाहते थे। अतः ही आपश्री ने देह से मुक्त हो जाने का निश्चय कर लिया था।

जिस तरह और जहाँ श्री अरविन्दजी रहे थे, वहाँ प्राण घातक दुर्घटना या विष की कोई संभावना भी नहीं। अतः आपके भौतिक जीवन की समाप्ति अपनी इच्छा पर ही अवलम्बित थी। अपने जीवन का ध्येय अतिमनस चेतना का उतरना भौतिक जगत में जल्दी हो सके इसलिए आपश्री ने अपने दैनिक जीवन का त्याग कर देने का संकल्प किया था। और वह भी किसी चमत्कारिक या अलौकिक रीति से नहीं, स्वाभाविक रीति से ही देह त्याग करने का निश्चय किया था। अत: ही परिस्थिति बदलने लगी थी। अभी तक शरीर में एक छोटे से बिन्दू के रूप में वशवर्ती रहा प्रोस्टैट ग्लैण्ड की अब वृद्धि होने लगी थी। श्री अरविन्द ने अपने आपको देह से अलग कर दिया था। रोग बढ़ने लगा। मूत्रोत्सर्ग की क्रिया बढ़ने लगी। डॉक्टर ने कहा कि ऑपरेशन से ही यह बीमारी ठीक हो सकती है। श्री अविन्द को इसकी जानकारी मिल गई थी अतः इस दर्द पर आश्चर्यचकित हो गए थे कि यह कैसे हो गया? फिर तो श्री अरविन्द अधिकाधिक शरीर से अलिप्त होने लगे थे। किसी को भी कमरे में आना मना कर दिया था।

शरीर अपना धर्म निभाता रहा। प्रोस्टैट ग्लैण्ड का असर शरीर पर दिखने लगा था। उससे अलिप्त श्री अरविन्द गहन मौन में उतर गये। पेशाब में भयजनक ताप दिखने लगे थे। आश्रम के अन्य वासियों को व दर्शनार्थ आए हुए लोगों को अपने पास बुलाया। जैसे आशीर्वाद देता हो, हाथ ऊपर उठा। श्री माताजी और सभी को वहाँ से चले जाने का इशारा किया और श्री अरविन्द 79 वर्ष की आयु में ब्रह्मलीन हो गए।

पून्य तनसिंहजी का देहोत्सर्ग :

17 से 18 घंटे रोज कर्म में व्यस्त रहना उनकी जीविका का स्वभाव बन गया था। श्री क्षत्रिय युवक संघ की साधना का विस्तार और उसकी गुणवत्ता में निरन्तर वृद्धि में लगे रहते थे। रात में भी पूरा विश्राम मिल जाए ऐसा भी उनके जीवन में नहीं रहा। लकवे जैसी बीमारी भी आई पर कुछ ही समय में पूर्ववत रीति से कर्म लग्न रहने लगे। पूज्य श्री को पेशाब का भी दर्द था। किडनी काम करती नहीं थी। अतः खून को शुद्ध करके, कचरे को पेशाब द्वारा बाहर पूरा फेंका नहीं जाता था। अतः खून में

जहर फैलने लगा। उनसे हृदय पीड़ा होने लगी थी। रक्त वाहिनी नसों से हृदय में आता खून फेफड़े में शुद्ध होने के लिए भेजने में हृदय में दर्द होता था। फेफड़ों से शुद्ध होकर पुनः हृदय में आए खून को शरीर में नाड़ियों के द्वारा बहा ले जाने के लिए निर्बल हृदय आवश्यक बल से धक्का दे नहीं सकता था। ऑपरेशन से यह समस्या सुलझाई जा सकती थी, पर पूज्यश्री उसके लिए राजी नहीं थे। एक दिन चुनाव में प्रत्याशी का फार्म भरने के लिए बाड़मेर जाने के लिए पूज्यश्री माँ सा का आशीर्वाद लेने के लिए सिवाना आए। सुबह का समय था। पूज्य नारायणसिंह जी आदि स्वयंसेवकों को माँ सा नाश्ता करवा रही थी। पूज्य तनसिंहजी ने कहा–'मैं नाश्ता नहीं करूँगा। मुझे भूख नहीं है।' कहकर सो गए, सदा के लिए।

पूज्य माँ सा ने पहले से ही कह रखा था कि हमारे परिवार में जब कभी भी किसी की मृत्यु हो तो उसका दाह संस्कार बाड़मेर में आए सरदारों के श्मशान में ही करना। अतः पूज्यश्री की मृत देह को बाड़मेर लाया गया और वहाँ के श्मशान में अंतिम संस्कार किया गया। पूज्यश्री की स्मृति में उसी जगह पर स्मारक बनाया गया है। उस समय पूज्य श्री 55 वर्ष के थे।

दोनों योगियों की जीवन साधना की फलश्रुति :

श्री अरविन्द ने स्वेच्छा से अपने शरीर को निष्प्राण बनाकर अतिमनस चेतना को प्रकृति की स्थूल भूमिका पर उतरने के लिए आधार तो बना दिया था और वह चेतना उतरी भी थी, पर उतने से श्री अरविन्द की साधना का इतिश्री नहीं हो गया था। अतिमनस चेतना द्वारा प्रकृति के जड़त्व को चेतना में रूपान्तरित करना अभी बाकी था। श्री माताजी ने यह काम करने के लिए आवश्यक साधना प्रारम्भ कर दी। करीब छः वर्ष की कठिन साधना के फलस्वरूप वह परम चेतना स्थूल भूमिका में कार्य करने के लिए सक्रिय तो हो गई, मगर अभी उसके लिए अपना कार्य करना सरल नहीं था, क्योंकि मानव शरीर अभी दिव्य शक्ति के प्रति थोड़ा-सा भी खुला नहीं हुआ था। और न वह इतना विशुद्ध व प्रकाशित था कि जिससे परम चेतना उसको आधार बना सके।

मानव सहज रूप से अपने को बदलना नहीं चाहता। उसके लिए जो अभीप्सा चाहिए, जो श्रद्धा चाहिए उसके लिए की जाती साधना में सहज रूप से आते विघ्नों से संघर्ष करने के लिए धैर्य और अमाप सहनशक्ति चाहिए, उसका सदंतर अभाव था। श्री माताजी का 95 साल की साधना के बाद 1973 में अवसान हुआ। अभी भौतिकवाद में फंसा जगत नूतन प्रकाश से लाभान्वित नहीं हो सका है। इस साधना से जुड़े इने-गिने लोग व्यक्तिगत रूप में बहुत ऊंचे उठे हैं। मगर सामूहिक सांघिक रूप में लोग इस साधना से दूर ही हैं। फिर भी वह दिव्य चेतना काम कर रही है और आशा है कि एक दिन ऐसा आयेगा कि पृथ्वी पर नये युग का निर्माण होगा।

पूज्य तनसिंहजी की सम्पूर्ण योग की साधना, नवीनतम और आसाधारण होने के कारण संघ स्थापना के 78 वर्ष के बाद भी अन्य समाज की बात तो दूर रही, जिस समाज को आधार बनाकर पूज्यश्री ने साधना की थी उस क्षत्रिय समाज का बहुत बड़ा भाग आज भी उस साधना से अनभिज्ञ ही है। खोखला अभिमान, संकुचित स्वार्थ वृत्ति, पीढियों से नसों में जम गये प्रमाद और लम्बे समय से अभावों में जी रहे समाज में शिक्षा व थोड़ी आर्थिक स्थिति सुधरने के कारण अब समाज धनोपार्जन के पीछे भागा-भागा जा रहा है। ऐसे व्यक्तिवाद के कोलाहल में संघ साधना की बांसुरी कौन सुने?

हालांकि शाखा व प्रशिक्षण शिविरों के माध्यम से एवं संघ स्थापना के स्वर्ण जयंती समारोह, हीरक जयंती समारोह एवं पूज्य तनसिंहजी जन्मशताब्दी समारोह से संघ का परिचय भारत के कई राज्यों के क्षत्रिय समाज को हुआ है। फिर भी संघ का सर्वात्मना स्वीकार होना अभी बाकी है। समाज में कर्तव्य के प्रति जागृति की हलचल जरूर

दिख रही है, मगर जगना, उठना और संघ प्रकृति में सक्रिय सहयोग, आवश्यकता की तुलना में बहुत कम मिल रहा है। व्यक्तिगत रूप में समाज के हजारों नवयुवक श्रद्धा व समर्पण भाव से संघ का काम कर रहे है, मगर समाज हितेच्छु संगठनों के सदस्य संघ के शिविर लगाने में आवश्यक सहयोग करने में, अपने परिवार के बच्चों को प्रशिक्षित करने के लिए शाखा-शिविरों में भेजने में ज्यादा उत्साह नहीं बताते हैं। कहते तो हैं कि समाज जागरण, संघठन के लिए संघ ही एकमात्र सही मार्ग पर, सही ढंग से काम कर रहा है।

हमारा, जिन्होंने संघ साधना का मूल्य समझा है, पूज्यश्री की अन्तर्प्रेरणा पहचानी है, समय की मांग को समझा है, कर्तव्य है कि दूसरे क्या कर रहे हैं, कहाँ भागे जा रहे हैं, क्यों नहीं संघ से जुड़ रहे हैं आदि शिकायत करने व रोना रोने की बजाय हम नहीं, मैं पूरे मनोयोग से संघ का काम करता रहूँगा। लोग मेरी बात से नहीं, मेरे जीवन से, व्यवहार से प्रभावित होकर संघ से जुड़ेंगे, ऐसे विश्वास के साथ काम करता रहूँ। पूज्य तनसिंहजी ने अपने जीवन की आहुति देकर जिस यज्ञ को प्रज्वलित रखा था, उसको हम भी अपने जीवन का एक भी दिन, द्रव्य का एक भी पैसा व हृदय का एक भी पवित्र भाव संघ से छिपाकर न रखकर अपनी ओर से -'इदं समाजाय स्वाहा, इदन्नमम' कहकर आहुतियाँ देते रहें। संघ कार्य पूर्ण रूप से ईश्वर का कार्य है, हम निमित्त बने रहें, इसी प्रार्थना के साथ-**'जय संघशक्ति'**।

पृष्ठ 9 का शेष

चलता रहे मेरा संघ

उनकी अच्छी पकड़ थी। यह असाधारण बात है। जो गरीबों के साथ रहते तो उनकी बात करते हैं, धनवानों के साथ रहते तो उनकी बात करते हैं। यह उनकी एक विशेष प्रतिभा थी, और इसी के कारण पूरे राजस्थान में राजनीति से संबंधित जितने भी निर्णय लिए गए उनमें उनका विशिष्ट योगदान रहा। राजनीति कहीं गई नहीं। राजनीति में यदि हम पिछड़ते हैं, तो हम और ज्यादा कमजोर हो जाएँगे।

दूसरी बात जो आयुवानसिंह जी ने कही थी, बलवान बने बिना संघर्ष नहीं हो सकता और संघर्ष बिना, क्षत्रिय, क्षत्रिय कैसे रह सकता है। कितने प्रकार के बल हैं, कौन-कौनसी शक्तियाँ हैं, उनके आयुवानसिंह जी उपासक थे। वो सब कुछ हमको दे गए। हमको खोजना है, कहाँ हीरे हैं, कहाँ मोती हैं, कहाँ लाल हैं। यह सारी चीजें उन्हीं के साहित्य में मिल जाएगी। हम उनसे प्रेरित होकर पूरे समाज को जोड़ें। दूसरा, जो यह पुस्तक है, 'राजपूत और भविष्य', इसको जब आप पढ़ेगे, तो वर्तमान राजनीति में सफल होने का अचूक प्रयत्न है। सब लोगों को साथ लिए बिना आज कोई भी जाति आगे नहीं बढ़ सकती। राजपूत हमेशा सब लोगों को साथ लेकर चला है, लेकिन एक सोच थोड़ा-सा मुझे दोषपूर्ण दिखाई देता है, आजकल के राजनेता भी बहुत कहते हैं, कि ये तो आज तक हमसे दूर थे, इनको नजदीक लें। मुझे थोड़ी सी गंध आ रही है, इनकी बातों में, वो हमारे साथ रहें, तो बराबर का दर्जा। पर बराबर का दर्जा हो, वो भी नहीं है। यदि मेहनत करके वे हमारे साथ होते हैं, तो उनके साथ भी पावर होनी चाहिए, उनके पास भी शक्ति होनी चाहिए जिससे कि उनमें भी रहा हुआ अभाव दूर हो सके। ये सारी बातें इस पुस्तक में भलीभाँति समझाई गईं हैं। आप लोग इस पुस्तक को पढ़ें। यह यहाँ भी उपलब्ध है। सारी बातें बताई जा चुकी हैं। मैं तो यही बात कहूंगा कि उनकी स्मृति हमारे पटल से दूर न रहे, तो यह साल बहुत अच्छी तरह से मना सकेंगे। और यह एक माईल स्टोन बन सकता है, 2019 से 2020 तक का। हम इसके लिये प्रयत्नशील रहें।

जय संघ शक्ति!

राष्ट्र नायक वीर दुर्गादास राठौड़

– डॉ. कमल सिंह बेमला

जब कभी देशभक्ति, कर्तव्यपरायणता, सत्यनिष्ठा, बहादुरी, वीर, धीर, पराक्रमी, स्वामिभक्ति, मित्रता, त्याग, प्रणपालक, शरणागतरक्षक, धर्मसमन्वयकारक का जिक्र आता हैं तो बरबस एक वरेण्य व्यक्तित्व का धनी, जांबाज और पुरोधा जो मारवाड़ की स्वतंत्रता की अलख जलाये रखने के लिए कभी चैन से नहीं सोया तथा मुगल सल्तनत की ईंट से ईंट बजा दी थी, का स्मरण हो आता है। करीब 30 वर्षों तक कठिन से कठिन परिस्थितियों में घोड़े की पीठ पर बैठकर असीम दुख झेले। उसने घोड़े की पीठ पर बैठकर बाटियाँ सेक कर खाई। वह था आजादी का परवाना, तलवार का धनी, जबान का पक्का वीर दुर्गादास राठौड़।

आठ पहर चौसठ घड़ी घुड़ले ऊपर वास।
सैल अणि सूं सेकतो बाटी दुर्गादास।

वीर दुर्गादास का जन्म 13 अगस्त, 1638 ई. (तदनुसार द्वितीय श्रावण शुक्ल पक्ष चौदस, 1695 वि. सं.) को जोधपुर के पास सालवा कलां गाँव में आसकरण जी की तीसरी संतान के रूप में माता नेत कँवर भटियाणी की कोख से हुआ था। बचपन में ही सालवा, लूणवा, गंगाणी से ही उसकी वीरता के किस्से मशहूर होने लगे थे। एक बार जोधपुर राज्य की सेना के कुछ ऊँट चरते हुये आसकरण के खेत में घुस गये। बालक दुर्गादास के विरोध करने पर चरवाहों ने कोई ध्यान नहीं दिया और महाराजा के किले के बारे में धोळा ढूंढा कहकर दुर्वचन कहे तो वीर युवा दुर्गादास सहन न कर सके, आग-बबूला हो तलवार निकालकर एक ही पल में ऊँट की गर्दन उड़ा दी। चरवाहे डर कर जोधपुर दरबार में गये और फरियाद की। बालक की इस वीरता की खबर जब जोधपुर नरेश महाराजा जसवन्त सिंह को लगी तो वे उस वीर बालक को देखने के लिये उतावले हो उठे। उन्होंने अपने सैनिकों को दुर्गादास को दरबार में लाने का हुक्म दिया। अपने दरबार में उस वीर बालक की निडरता एवं निर्भीकता देखकर महाराजा अचंभित रह गये। स्वयं आसकरण जी ने जब अपने पुत्र को इतना बड़ा अपराध निर्भीकता से स्वीकारते देखा तो वे भी दाँतों तले उंगली दबाने लगे। परिचय पूछने पर महाराजा को मालूम हुआ कि यह वीर बालक आसकरण का ही पुत्र है, तो महाराजा ने दुर्गादास को अपने पास बुलाकर पीठ थपथपाई और इनाम के रूप में तलवार भेंट कर उन्हें अपनी सेना में भर्ती कर लिया और अपने मुख्य अंगरक्षकों में रखा। वीर दुर्गादास ने महाराजा के साथ कई लड़ाईयों (धरमाट, सामूगढ़ और दोराई आदि) में अपनी तलवार का जौहर दिखाया इसमें मुख्यतः धरमाट का युद्ध था जिसमें दुर्गादास ने युद्ध में एक के बाद एक तीन घोड़े बदले और तीन-चार तलवारें बदली, लेकिन जब तक होश कायम रहा वे मुकाबला करते रहे। वीर दुर्गादास महाराजा के साथ जमरूद, काबुल की चौकियों पर गए। धर्मान्ध औरंगजेब महाराजा से खार खाता था क्योंकि उन्होंने उत्तराधिकार युद्ध में दाराशिकोह का साथ दिया था पर महाराजा की दिलेरी के कारण वह उनके सामने कुछ नहीं कहता था। वह महाराजा को कभी दक्षिण, कभी उत्तर के युद्ध अभियानों में भेजता रहता था और युद्ध में उलझाए रखता था। उसने जोधपुर के उत्तराधिकारी कुँवर पृथ्वी सिंह को भी धोखे से मौत के घाट उतरवा दिया था। महाराजा अपनी उत्तरार्ध अवस्था में काबुल में अन्तिम सांसें ले रहे थे और मारवाड़ की चिंता उन्हें खाए जा रही थी क्योंकि कोई उत्तराधिकारी नहीं था और उनकी दोनों रानियाँ भी गर्भवती थी ऐसे में वीर दुर्गादास को उन्होंने अपने पास बुलाया और मारवाड़ की रक्षा का दायित्व सौंपा। वीर दुर्गादास ने महाराजा को आश्वस्त किया और कहा कि जब तक मेरे शरीर में रक्त की एक बूंद भी रहेगी तब तक कोई दुश्मन मारवाड़ पर बुरी नजर नहीं डाल सकेगा। मेरी तलवार यमराज बनकर दुश्मनों की जान लेती रहेगी। इस

तरह महाराजा के अंतिम समय में दुर्गादास ने जो प्रण किया उसे अंतिम समय तक निभाया और मारवाड़ को अंततः 1707 ई. में पुनः महाराजा अजीत सिंह को सौंपा।

ऊगा नखतर आंथिया, जोधाणे इतिहास।
एकज ध्रुव तारो अटळ, दिठो दुरगादास।।

वीर दुर्गादास ने औरंगजेब की नजर कैद से बालक अजीत सिंह को दिल्ली से छुड़ाया और बड़ी बहादुरी से लड़ते हुए बालक अजीत को अपने पीठ पर बांधकर भीषण संघर्ष करते हुए अपने 300 सहायकों के साथ 2000 मुगलों का सामना करते हुए अंत तक केवल सात रण बाँकुरे ही बचकर जयपुर, मेड़ता होते हुए सिरोही के कालिंद्री पहुँचे जहाँ पंडित जयदेव ने बालक अजीत की परवरिश की और उनका संरक्षण किया, कभी छप्पन की पहाड़ियों, हलदेश्वर, पिपलून, सिवाना, डाडुआ, पालड़ी, कभी केलवा में रखा। वीर दुर्गादास ने कूटनीति से काम लेते हुए औरंगजेब के पुत्र अकबर शाह द्वितीय को नाडोल में अपनी ओर मिला लिया और उसे भारतेश्वर की उपाधि देते हुए बादशाह घोषित किया जिससे मुगलों में फूट पड़ गयी और दुर्गादास ने मेवाड़, मारवाड़, ढूंढाड़ और मराठा शक्ति को एक छत के नीचे लाने का कार्य किया। दुर्गादास की कूटनीति का परिणाम यह हुआ की अंततः मुग़ल साम्राज्य की चूलें हिल गयी, औरंगजेब दक्षिण में ही उलझा रह गया और उसके बाद मुग़ल साम्राज्य का पतन हो गया।

मारवाड़ के मुक्ति संग्राम के वे सबसे बड़े नायक थे। उनके पराक्रम से औरंगजेब बेनूर हो जाता था और दिल्ली भी भयाक्रांत हो जाती थी, आज भी लोक स्मृति में ये प्रसंग सप्राण बने हुए हैं।

दूरगो आसकरण रो, नित उठ बागां जाय।
अमल औरंग रो उतरै, दिल्ली धड़का खाय।।

अकबर शाह के पुत्र बुलंदअख्तर और पुत्री सफियतुन्नीसा को इस्लाम रीति से शिक्षा दिला कर उन्होंने इंसानियत का असीम और अप्रतिम नायाब उदाहरण प्रस्तुत किया। औरंगजेब स्वयं इस बात से वीर दुर्गादास के प्रति नतमस्तक हो गया था।

औरंगजेब ने दुर्गादास जी को कई प्रलोभन देने के प्रयास किये पर यह वीर किसी भी लालच, प्रलोभन में नहीं आया।

प्रसिद्ध डिंगल कवि और इतिहासकार स्व. डॉ. नारायण सिंह जी भाटी ने अपने खंड काव्य दुर्गादास में दुर्गादास जी के उज्जवल चरित्र के बारे में बहुत ही सुन्दर चित्रण किया हैं–

अस रा असवार ऊजळा,
रह्यो ऊजळे वागाँ,
ऊज़ळी खागाँ,
ऊजळे मनाँ,
राखियौ खत ऊजलौ,
पण असल रंगरेज़ आसरा,
थे रंगियौ कसूँबळ धरा–पोमचो–
बिना कर रंगियां।।

अर्थात्– दुर्गादास! तेरा संपूर्ण व्यक्तित्व ही उज्जवल था। उज्जवलता तो संपूर्ण रूप से दुर्गादास में आत्मसात हो गई थी। उजला सफेद घोड़ा और उजला ही सवार। सफेद उजले वस्त्र, उजली तलवार, उज्जवल मन और तेरी दाढ़ी भी उजली। सब तरह की उज्जवलता से घिरे हुए भी हे दुर्गा बाबा! तू एक ऐसा सच्चा रंगरेज था कि जिसने धरती की चुनरिया को एकदम से लाल रंग दिया और तेरे हाथ तक लाल न हुए।

अंतिम समय वीर दुर्गादास ने अपनी मातृभूमि से दूर स्वैच्छिक निर्वास लेकर कुछ समय मेवाड़ (सादड़ी, इंटाली, चंगेड़ी, विजयपुर, रामपुरा, भानपुरा आदि जगह) और फिर उज्जैन नगरी में महाकाल के चरणों में रहकर धर्मपूर्वक जीवन बिताते हुए और 80 क्रियाशील वर्ष की वय में इस असाधारण नायक ने चक्रतीर्थ पर 22 नवम्बर 1718 ई. (तदनुसार शनिवार, मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष की एकादशी, वि. स. 1775) को अंतिम सांस ली। जहाँ स्थापित उनकी मनोहारी छत्रीआज भी भारत के इस अमृत पुत्र की कीर्ति का जीवन्त प्रतीक बनी हुई है। इस स्मारक की वास्तुकला

राजपूत शैली में है तथा एक प्रसिद्ध पर्यटन स्थल है। लाल पत्थर से निर्मित इस छत्री पर दशावतार, मयूर आदि को अत्यंत कलात्मकता के साथ उकेरा गया है। आसपास का परिदृश्य प्राकृतिक सुषमा से भरपूर है, इसलिए यह स्मारक एक छोटे से रत्न की तरह चमकता है। दुर्गादास की इस पावन देवली पर दुर्गादास जयन्ती आयोजन के साथ ही समय समय अनेक देशप्रेमी मत्था टेकने के लिए आते हैं।

भारतीय इतिहास में उनका नाम स्वर्णाक्षरों में अंकित है। उनकी वीरता व कर्तव्य परायणता की कथा आज भी गायी जाती है।

राजवंश ने राखियो, साम धरम मरुदेस।
बदला में राखि नहीं, दो गज धर दुरगेस।।

उन्हें प्रसिद्ध इतिहासकार कर्नल टॉड ने भारत का लियोनोडस कहा है जो यूनान का मशहूर योद्धा था। वीर दुर्गादास राठौड़ के अवदान को लेकर पूर्व में अनेक प्रकाशन अस्तित्व में आए हैं, यथाः जगदीशसिंह गेहलोत कृत इतिहास ग्रंथ वीर दुर्गादास राठौड़, इतिहासकार डॉ रघुवीरसिंह कृत इतिहास ग्रंथ राठौड़ दुर्गादास, सुखवीरसिंह गेहलोत कृत इतिहास ग्रंथ स्वतन्त्रता प्रेमी दुर्गादास राठौड़, विठ्ठलदास धनजी भाई पटेल कृत गुजराती उपन्यास वीर दुर्गादास अथवा मारू सरदारो, प्रेमचंद कृत वीर दुर्गादास, द्विजेन्द्रलाल राय कृत बांग्ला नाटक दुर्गादास (हिन्दी अनुवाद रूपनारायण पांडेय), हरिकृष्ण प्रेमी कृत नाटक आन का मान, प्रहलाद नारायण मिश्र की पुस्तक राठौड़ वीर दुर्गादास, नारायणसिंह शिवाकर की राजस्थानी में निबद्ध वीर दुर्गादास सतसई आदि। इनके अलावा रामरतन हालदार, पं विश्वेश्वरनाथ रेउ, डॉ रामसिंह सोलंकी आदि ने भी उनके चरित्र को ऐतिहासिक दृष्टि से आकार दिया है। इतिहासकार जदुनाथ सरकार ने दुर्गादास जी के अवदान को लेकर ठीक ही कहा है, उनको न मुगलों का धन विचलित कर सका और न ही मुगल शक्ति उनके दृढ़ हृदय को पीछे हटा सकी। वह एक वीर था जिसमें राजपूती साहस व मुग़ल मंत्री सी कूटनीति थी। दुर्गादास ने अपूर्व पराक्रम, बलिदानी भावना, त्यागशीलता, स्वदेश प्रेम और स्वाधीनता का न केवल आदर्श रचा, वरन् उसे जीवन और कार्यों से साक्षात् भी कराया। उनके जैसे सेनानी के अभाव में न भारत की संस्कृति और सभ्यता की रक्षा सम्भव थी और न ही आजाद भारत की संकल्पना संभव। कविवर केसरीसिंह बारहठ की यह प्रार्थना निरन्तर साकार होती रहे, तब निश्चय ही राष्ट्र को कोई भी शक्ति परतन्त्रता की बेड़ियों में कदापि जकड़ न सकेगी :

देविन को ऐसी शक्ति दीजिये कृपानिधान।
दुर्गादास जैसे माता पूत जनिबो करै।।

आज भी कहा जाता है–

माई एहड़ा पूत जण जेहड़ा दुरगादास।
बांध मंडासो राखियो बिन थाम्बा आकास।।
ढम्बक ढम्बक ढोल बाजे, दे दे ठौर नगारां की।
आशे घर दुर्गो न होतो, सुन्नत होती सारां की।।

क्षत्रिय युवक संघ के संस्थापक पूज्य श्री तन सिंह जी दुर्गादास जी को अपना आदर्श वीर पुरुष मानते थे। वीर दुर्गादास जी पर उन्होंने बहुत से लेख और झनकार किताब में उन पर गीत लिखें थे और अपने उद्बोधन में भी सदैव उनका जिक्र करते थे। वीर दुर्गादास जी की छत्री पर बैठकर तन सिंह जी ने होनहार के खेल पुस्तक में क्षिप्रा के तीर लेख लिखा था जो लगता हैं उन्होंने आँसुओं में कलम डुबो– डुबो के लिखा हो।

भारतीय इतिहास का एक ऐसा अमर वीर, जो स्वदेशाभिमान और स्वाधीनता का पर्याय है, जो प्रलोभन और पलायन से परे प्रतिकार और उत्सर्ग को अपने जीवन की सार्थकता मानता है। दुर्गादास राठौड़ सही अर्थों में राष्ट्र परायणता के पूरे इतिहास में अनन्य, अनोखे हैं।

बखत रै खेत निपजिया दुर्गदास,
आयाँ बखत जुग मांझी फेर आवसी।
और माणस मर खूटसी इला रा,
पण जुगाँ जायोड़ा तो जुगाँ ही जीवसी।।

इतिहास के ऐसे नायाब पुरोधा को कोटि–कोटि नमन।

स्वाभिमानी वीरम

– युधिष्ठिर

विजय इस बात में नहीं कि आपने जो सोचा वो हुआ या नहीं, विजय इस बात में हैं कि शत्रु आपके विचारों को नहीं बदल सका। पराजय इस बात में नहीं कि लोगों ने आपका साथ नहीं दिया, पराजय इस बात में है कि आपने कोशिश नहीं की। जैसे स्वाभिमान राजपूत की प्राथमिकता है ठीक वैसे ही रक्त की शुद्धि भी। उज्जवल रक्त ही उज्जवल इतिहास रच सकता है। मृत्यु का वरण रक्त की शुद्धि के लिए किया और कोई पापी मृत देह को भी छू न सके इसलिए जौहर किया। तुम्हारे प्रश्न का ज्वाब मैंने दे दिया कि राजपूत थे तो जौहर क्यों हुआ? अभी भी समझ नहीं आया तो यह समझ लो कि विजय और पराजय इस बात पर निर्भर करती है कि शत्रु का मकसद पूरा हुआ या नहीं। लेकिन यह तो ऐसी विजय थी जहाँ जीते जी वीरम नहीं माना और फिर वीरम का सिर स्वाभिमान पर अड़ गया। राजपूत कभी पराजित हो ही नहीं सकता। सिर्फ सैन्यबल की वजह से अगर तुम्हें विजेता माना जाये तो आज तुम्हारे डेरे क्यों उठ गये। हजारों के लश्कर के बावजूद तुम्हें पता था कि पराजय निश्चित है इसलिए तुमने धोखा किया। छल, कपट, धोखा तुम्हारे रक्त की विशेषता है और स्वामिभक्ति हमारे रक्त की।

माँ चामुण्डा किलकारी कर चुकी थी। महाकाल ने कैसा भयंकर तांडव रचा। सूर्यदेव भी उस दिन क्रोध से लाल हो गए थे, शायद किले की दिव्यता से उन्हें ईर्ष्या हो गई थी। पहाड़ी पर स्थित दुर्ग लाशों से अटा पड़ा था। बावड़ी के पास पड़े राख के ढेर की तपन कलेजे को कंपा रही थी कि राजपूत किस हद तक जा सकता है। अपने स्वाभिमान के लिए सैंकड़ों लोगों को दांव पर लगा दिया। यह गौरव की बात है। सब इसमें भी गौरव करते थे। हमारा स्वाभिमानी केसरिया ध्वज इसी तरह फड़फड़ा कर हमारे बलिदान की कहानियाँ सुनाता रहे।

वीरम के कदम माँ आशापुरा के मंदिर की ओर बढ़ रहे थे। सिर्फ चुनिंदा योद्धा और सामने समुद्र के समान विशाल लश्कर। पिता कुछ प्रहर पहले स्वर्गारोहण कर चुके थे। जौहर की अग्नि अभी भी दिमाग में धधक रही थी। आँखों से रक्त बरस रहा था। वह कलम का नहीं तलवार का वक्त था। कहानी जो सदियों तक विधाता की कलम को चुनौती देती रहेगी।

छोटी-सी उम्र में हिन्दुस्तान के सबसे बड़े पहलवान को धूल चटा दी। दंगल देखने वालों की ऊंगलियाँ देर तक दाँतों तले दबी रखी। पंजू पायक के हारते ही अलाऊद्दीन के अहंकार पर पानी फिर गया। वीरम के यौवन व अजय शौर्य को देखकर फिरोजा मुग्ध हो गई थी। उसने सपनों में उड़ान भरी, कल्पनाओं को पंख लगाए और मन की मुस्कुराहट के साथ वीरम को पति रूप में पाने की अपने पिता से जिद्द कर बैठी।

जो धर्म के आगे जिन्दगी को कुछ समझता ही नहीं था। जो पिता की आज्ञा पर हलक में हाथ डालकर उसका कलेजा निकालने की क्षमता रखता था। जो पिता की धड़कनों पर सांस लेता था। उस स्वाभिमानी के सामने अब परीक्षा की घड़ी है।

शहजादी ने जिद्द पकड़ रखी थी। हरम की बेगमों ने अलाऊद्दीन को मजबूर कर दिया। अलाऊद्दीन ने शहजादी का विवाह उस बालक से करने का ऐलान कर दिया।

शहजादी से केवल एक बार मुलाकात हुई थी। उस उम्र में स्त्री-पुरुष का एक-दूसरे की तरफ आकर्षित होना सामान्य बात थी। एक तरफ दिल्ली के तख्त को चुनौती देनी थी। धर्म इस बात की इजाजत नहीं दे रहा था। परम्परा विश्वासघात कर रही थी। इस उहापोह में पूरी रात गुजर गई। सवेरे पिताजी का पत्र मिला –

''धर्म की रक्षा करना क्षत्रिय का कर्तव्य हैं। हम प्रजा के अधिकारों की सुरक्षा के लिए लड़ते हैं। तुमने देश और प्रजा को गौरवान्वित किया है। स्वधर्म क्षत्रिय की सबसे बडी पूंजी है, उसके लिए मिटना क्षत्रिय का कर्तव्य है। उसके आगे भावनाओं और जीवन का कोई महत्त्व नहीं।''

निर्णय हो गया। विधर्मी से विवाह यानी स्वधर्म को स्वयं ही कुचल देना। मेरा मान मर्दन पूरे समाज का मान मर्दन है। वीरम ने दिल्ली छोड़ने का निर्णय ले लिया। लेकिन दिल्ली से निकलना इतना आसान नहीं था। मित्र राण को दिल्ली छोड़कर वीरम निकल गया। पिता के पास पहुँचकर पिता को सब कुछ बताया। पिता को पता था रजपूती ने उन्हें याद किया है। अब शत्रु से चट्टान बनकर भिड़ने का वक्त था। युद्ध की ज्वाला धधकने वाली थी। किले को घेरा लगा दिया। महीनों घेरा पड़ा रहा। किला स्वाभिमान के साथ सीना ताने खड़ा पड़ा रहा। एक मन्द मुस्कुराहट उसके विजय कौशल को दर्शा रही थी। स्वाभिमानी हो भी क्यों नहीं वीरम का निवास जो था। किले को भेद पाना शत्रु के बस का नहीं था।

फिर घटिया इतिहास दोहराया गया। छल-कपट ने फिर शत्रु का साथ दिया। अहंकार ने हमारे चेहरे पर फिर कालिख पोत दी। छोटे से ताने से आहत बीका दहिया बिक गया। सोने से भी महंगे स्वर्णगिरी को उसने राई के भाव बेच दिया।

शत्रु भीतर प्रवेश कर चुका था। तीन दिन से लगातार युद्ध जारी था। अक्षय तृतीया के दिन महापराक्रमी रणकौशल का प्रदर्शन करते हुए महाराज कान्हड़देव स्वर्ग सिधार चुके थे। स्वर्णगिरी को नजर लग चुकी थी। लेकिन विधाता को अब भी चैन कहाँ था। रक्त की होली खेली जा रही थी। कहीं सूखा रक्त पड़ा था तो कहीं ताजा रक्त उससे मिलन के लिए तड़फ रहा था। राख के ढेर में अग्नि अब भी सुलग रही थी। यह सामान्य जौहर नहीं था। सोलह सौ वीरांगनाओं ने अपने आपको उस अग्नि के भेंट किया था।

वीरम ने माँ आशापुरा के मंदिर में प्रवेश किया। उसने कभी न सोचा वो इस कदर राजा बनेगा। शत्रु अब भी छाती पर खड़ा था। उस वीर बालक को अभी कठिन परीक्षा से गुजरना था। माँ को प्रणाम कर उसने अभय वरदान मांगा। उसके अश्रु फूट पड़े। वक्त था सब कुछ खोकर सब कुछ पाने का। जगदम्बा ने उसके सिर पर हाथ फेरा।

''बेटा! इस भूमि को पवित्र करने का वक्त आ गया है। अब तू नहीं लड़ेगा। अब लड़ेगी रजपूती आन-बान और शान। मेरी प्यास बुझा बेटा। आज जितना रक्त गिराएगा वह रक्त मेरा भक्ष्य है। जब तक अंतिम शत्रु नहीं कट जाता मैं डकार नहीं लूंगी।''

वीरम ने आँखें उठाकर देखा तो माँ के हाथ से खड्ग नीचे गिर गया।

''उठा इसको। मेरा बेटा होकर आँसू बहाता है। तू इस खड्ग से मेरे को ताल देना। आज तुझे तेरी माँ का वरदान है, थकान तुझे छूएगी भी नहीं। रक्त से अभिषेक कर मेरा। उठा खड्ग करता जा आततायियों का सिर कलम। पीछे मुड़कर मत देखना। तेरी माँ तेरे साथ शत्रुओं का संहार करेगी।''

वीरम शत्रुओं पर काल बनकर टूट पड़ा। एक ही वार से खून की नदियाँ बहने लगी। कल-कल करते खून के नालों ने प्रकृति में संगीत को घोल दिया। माँ आशापुरा थिरकती ही जा रही थी।

उसने मोर्चे पर शहीद हुए राण के शव को देखा। वह बिना विचलित हुए आगे बढ़ गया। उस पर माँ का तेज चढ़ा हुआ था।

'खच्च।'

तीन नरमुंड खरबूजे की तरह लुढ़क गए।

दर्जनों योद्धा एक साथ आते और वीरम के कदम बढ़ाते ही ठिठककर पीछे हो जाते। जिधर वह जाता उधर के आतताई जिन्दगी के लिए छटपटाते और कुछ लोग भागकर जान बचाते। सब भोंचक्के होकर उसी को निहार रहे थे। उसने कितनों को सुलाया इसकी गिनती कर पाना

कठिन था। एक प्रहर के युद्ध में दर्जनों आत्माएँ शरीर को छोडकर मुक्त आकाश में विचरण करने निकल पड़ी थी। किसी को कराहने का भी मौका नहीं दिया। अलाऊद्दीन हार के नजदीक पहुँच गया। हजारों के लश्कर के बीच प्रहर से भी अधिक समय तक युद्ध करना सम्भव नहीं था। लेकिन वह न थक रहा था और न ही रुक रहा था। स्वर्णगिरि किले की चौथी गणेशपोल तक आए सैनिकों को वह पहली पोल सूरजपोल तक खदेड़ ले गया था। अलाउद्दीन की सेना काल की तरफ बढ़ रही थी या काल अलाउद्दीन की सेना की तरफ, यह समझ नहीं आ रहा था।

फिर अलाउद्दीन ने कुटिल चाल चली। वह खुद बालक के सामने आ गया और अपना हाथ रोक लिया। अलाउद्दीन को वार करते नहीं देखा तो उसने भी शस्त्र चलाना बंद कर दिया।

''वार करो बच्चे।''

''क्षत्रिय निहत्थों पर पार नहीं करता।''

''मैं भी बच्चों और औरतों पर वार नहीं करता।''

''मैं बच्चा नहीं स्वर्णगिरी का शासक हूँ।''

''तो फिर वो औरत कौन है?''

वीरम ने पीछे मुड़कर देखा।

''सामने देख बेटा! यह छल है।''

तीन लड़ाके एक साथ वीरम पर कूद पड़े। वीरम ने तीनों को यमलोक की सैर पर भेज दिया। अब दर्जनों एक साथ टूट पड़े। किसी के हाथ को शरीर से जुदा कर दिया, तो किसी के सिर को। लौहा बजता रहा। नरमुण्डों के ढेर लगते रहे। छल ज्यादा समय थोड़े ही देता है। इस बार वीरम का सिर धड़ से अलग हो गया। वीरम के दोनों हाथ चल रहे थे और धड़ किले से नीचे उतर रखा था। अलाउद्दीन की आँखें फटी की फटी रह गई। वह चीखा-

''कोई रोको इसको।''

लेकिन वीरम को कौन रोक सकता था। उसके साथ माँ का आशीर्वाद था। अभी तो वह रक्त की बरसात कर माँ को तृप्त करने में लगा हुआ था।

सहसा! अलाउद्दीन ने युद्ध बंद करने का आदेश दिया। वहाँ मौजूद एक सैनिक ने धड़ पर गंगाजल छिड़का। धड़ नीचे गिर गया। धड़ छटपटाने लगा। अब समय था शरीर से विलग होने का। दु:खों से इमेशा के लिए छुटकारा पाने का। उसने अपने आपको शरीर से बाहर धकेल दिया। छटपटाहट बंद हो गई। वीरम मुक्त आकाश में विचरण करने लगा और निकल गया सदियों की यात्रा पर। पुनर्जन्म की ओर। फिर से बलिवेदी पर झूलने के लिए। बलिदान की गाथा लिखने।

कटे हुए शीश को फिरोजा के सामने पेश किया गया। कभी वह अपनी आँखों को पौंछती तो कभी कटे हुए शीश को देखती। कभी चेहरा साफ दिखता तो कभी आँसू उसे धुंधला कर देते। अब फिरोजा वीरम के सिर को तिलक करना चाहती थी। वीरम तो वीरम था। जीते जी स्वाभिमानी था। उसके खून का एक-एक कतरा स्वाभिमानी था। स्वधर्म पर मरने-मिटने वाला वीर था वह। अब आखरी समय में कैसे पराजित हो जाता। फिरोजा ने जैसे ही कुंकुम से भरा हाथ वीरम के सिर की ओर बढ़ाया आकृति धुंधली हो गई। आँसू पौंछकर देखा तो वीरम का सिर घूम चुका था। उसने दूसरी ओर से फिर प्रयास किया। फिर वही हुआ। फिर सिर घूम गया। वीरम तो अजय था। उसे कौन पराजित कर सकता था। कभी वह घूमे हुए सिर को देख रही थी तो कभी अपने अंगूठे और कनिष्ठा में लगे कुंकुम की ओर। कामयाबी उसे अभी भी नहीं मिली। विजय तो वीरम की हुई।

फिरोजा की एकतरफा महोब्बत ने उसे कंगाल कर दिया। विजय तो वीरम की हुई। धर्म एक बार फिर टुकड़े-टुकड़े होने से बच गया। क्षत्रिय अरमानों को मसोस डालता है। विधर्मी से विवाह कैसा? वीरम ने मौत से विवाह कर लिया। पिता के अरमानों को जीवित रखा। वही किया जो पिता ने कहा था। इसलिए वीरम मिटा उस स्वधर्म पर जो उसके कलेजे में सांस ले रहा था।

●

क्षमाशीलता

– रश्मि रामदेरिया

क्षमाशीलता समझने की दृष्टि से देखें तो एक गहन और प्रायः अस्पष्ट सिद्धान्त है। हमें यह समझ कर चलना होगा कि क्षमाशीलता एक जटिल सिद्धान्त है। इसे आत्मसात करने के लिए हमें इसे गहराई से समझना होगा, क्योंकि अंधकार कभी अंधकार को बाहर नहीं कर सकता। ऐसा केवल प्रकाश ही कर सकता है। घृणा कभी घृणा को बाहर नहीं निकाल सकती, केवल प्रेम ही ऐसा कर सकता है।

हर व्यक्ति चुनौतियों से गुजर रहा है और हमें उसे देखने के लिए क्षमानुभूति की आवश्यकता पड़ेगी। इसका अर्थ यह नहीं कि हमें दुर्व्यवहार सहना चाहिए, या कोई विवेकपूर्ण कदम नहीं उठाना चाहिए, या किसी की गलतियों को सुधारना नहीं चाहिए। लेकिन क्षमाशीलता का अभ्यास करते हुए हमें घटना को व्यक्ति से अलग करके देखना चाहिए। समस्या से व्यक्ति को अलग करना भाषा से आरम्भ होता है, जिस तरह से हम घटना का वर्णन करते हैं। उदाहरण– यह कहना कि यह मेरी समस्या है, हमारे लिए अपराधबोध उत्पन्न करता है, जिसकी वजह से कुछ समय बाद हीनता विकसित हो सकती है। इससे हम सोचना आरम्भ कर सकते हैं कि हम इस स्थिति से निपटने में योग्य ही नहीं हैं, और उदासीन हो जाते हैं। यह कहना कि यह तुम्हारी समस्या है, हमें गुस्सा दिलाती है। केवल दूसरों पर आरोप लगाना हमें रोष के भंवर में ले जाता है। पर यह कहना कि यह एक समस्या है, समस्या को उसमें शामिल व्यक्ति से अलग कर देता है। यह अलग करना हमें उस व्यक्ति को क्षमा करने में ही समर्थ नहीं बनाता, बल्कि हमें उस समस्या से प्रभावकारी ढंग से निपटने में भी सहायता करता है।

धरती का धीरज, सूरज की तपन से, क्या कांपेगा कहीं
आसमाँ का शीश, किसी पर्वत के पुकारे क्या झुकेगा कहीं
नहीं झुकेगा कभी
गहरे सागरों को पीले, फिर भी होठ ना हिले, ऐसी रीत चाहिए।

हमारे अन्दर दो शक्तियाँ सदैव एक दूसरे के विरुद्ध संघर्षरत रहती हैं। एक शक्ति हमें उन कार्यों के लिए कहती है जो हमें नहीं करने चाहिए और दूसरी उन कठिन प्रतीत होने वाले कार्यों की ओर प्रेरित करती है जो हमें करने चाहिए। एक बुराई की आवाज है और दूसरी भलाई या ईश्वर की। अपने मन को अच्छी आदत की ओर मोड़ें और स्थिरतापूर्वक उसे भीतर विकसित होने दें। क्षमाशीलता के लिए सकारात्मक विचार, क्रियाशील इच्छाशक्ति, आत्म विश्लेषण एवं आत्म संयम, ये सभी अति आवश्यक हैं।

श्री क्षत्रिय युवक संघ के साहित्य की पुस्तक 'समाज चरित्र' में पूज्य तनसिंहजी ने स्पष्ट किया है कि सामुहिक जीवन के लिए सहयोगी भावना होनी चाहिए। सामान्य कठिनाइयों के समय भी सहयोगी भावना की आवश्यकता होती है और वह तभी उत्पन्न होगी जब क्षमाशीलता का गुण अपनाया जाएगा। कोई भी व्यक्ति अपने आपको अहंकारी नहीं मानता, अहंभाव की प्रवृतियाँ हमारी नजरों में धूल झोंकने के लिए स्वाभिमान के रूप में भेष बदल कर आती हैं। अभ्यास द्वारा जब कठिन से कठिन कार्य स्वचालित होने लगे तब कर्म को करने की नैतिक भावना भी तर्क आदि से ऊपर होकर बुद्धि का स्वभाव बन जाती है और उसी को संस्कार कहते हैं।

●

पहले कहना और बाद में करना, इसकी अपेक्षा पहले करना और फिर कहना अच्छा है। लेकिन सबसे अच्छा तो काम करके चुप ही रहना है।

– अरंडेल

संस्कार व संस्कृति

– पेपसिंह ''कल्लावास''

आदिकाल से ही क्षत्रियों की पहचान उनके सुविकसित संस्कार तथा महान संस्कृति के कारण जानी गई। विगत हजारों वर्षों में क्षत्रियों ने मातृत्व की रक्षा, जन हित, परोपकार, सनातन धर्म की पहचान, स्वतंत्रता व स्वाभिमान हेतु अनेकों युद्ध लड़कर वीरगति पाई। कोई भौमियां, कोई झुंझार, पितर तो हमारी मातएँ एवं असंख्य बहनों ने इस पावन धरा की सुरक्षा तथा आततायियों की मंशा को धराशाही करने के उद्देश्य से अनेकों शाका व जौहर कर इतिहास में अपना नाम मरकर भी अमर किया है। यही कारण है कि आज वर्तमान भौतिक युग में भी महाराणा प्रताप, वीर शिवाजी, पृथ्वीराज चौहान, रानी पद्मिनी आदि असंख्य स्त्री-पुरुषों की वीरता, त्याग व बलिदान की गाथा हर गली, मौहल्ले, गाँव-गाँव व ढ़ाणी-ढ़ाणी में गाई जाती है।

इस सबका कारण उनमें पल्लवित देशभक्ति, मातृ भक्ति, मातृ शक्ति के पले हुए संस्कार कण-कण, रग-रग में रौंद रहे थे। जिसके कारण राज तो क्या पथ्वी का स्वर्ग भी उनके लिए नगण्य था? क्या वर्तमान समय में कोई भी सत्ताआसीन ऐसा कर सकता है!

हमारे संस्कारों में यह संचित किया गया कि-

राम नाम की लूट है, लूट सके सो लूट।
अंतकाल पछतावेगा, तब प्राण जायेंगे छूट।।

वर्तमान के संदर्भ में यह पंक्ति इस तरह लिखूं तो शायद अतिशयोक्ति नहीं होगी-

अर्थ तंत्र की लूट है, लूट सके सो लूट।
अंतकाल पछतावेगा, जब प्राण जायेंगे छूट।।

क्या वर्तमान युग में दुनिया में कहीं कोई शाका, जौहर हुआ है? नहीं ना! क्योंकि कलयुग आते-आते लगभग सभी जनों ने अपने-अपने संस्कारों की तिलांजलि दे दी।

जब हम संस्कारों की बात करते हैं तो हम रात्रि शयन से उठते ही अपने माँ-बाप के चरण छू कर आशीष लेते हैं। चरण स्पर्श करने पर झुकना पड़ता है। जो झुकता है वह नरम होता है, जो ऐंठा रहता है वह अकड़ता है। कैरी जब कच्ची होती है तो ऐंठ में रहती है, ज्यों ही उसमें पीलापन या पकने की शुरुआत होती है वह टहनी से धीरे-धीरे नीचे की ओर झुकने लगती है। इसीलिए कहा गया है कि-

मात-पिता, गुरु के चरण छुएं जो,
चारों धाम तीर्थ फल पावें।
जो आशीष वो मुख से दे,
भगवान भी टाल न पावें।।

माता-पिता व गुरु तीन इस संसार में ऐसे प्राणी हैं जो हमें शिक्षा-दीक्षा-संस्कार देते हैं। माँ नौ माह उदर में रखकर पालती है। पिता कमाई करके लालन-पालन करता है। गुरु इस संसार के आवागमन से मुक्ति अथवा दुनिया में रहने, चलने, बढ़ने, अंत में ईश्वरत्व प्राप्त करने का मार्ग प्रदर्शित करता है। ये तीनों ही असीमित संस्कारों का खजाना हैं।

हम संस्कारों की बात करते हैं तो क्या आज का कोई युवक मुख्यमंत्री की ताजपोशी होते समय पिता की आज्ञा मानते हुए गद्दी छोड़ सकता है? लेकिन श्रीराम ने ऐन वक्त पर पिताश्री की आज्ञा शिरोधार्य मानकर राजतिलक का त्याग कर वनवास जाना सुनिश्चित किया। ऐसे संस्कार ढूंढ़ने से भी कहाँ मिलेंगे? माँ सीता पति धर्म निर्वाह करते हुए राजमहल छोड़ दर-दर ठोकरें खाती जंगल में गहन दुःखों को संजोती अपने देवर व पति के साथ प्रवास करती रही।

क्या आज लक्ष्मण-सा आज्ञाकारी भाई कहीं दिखाई देगा? सभी संस्कार विहीन धन के लालच में न्यायालय के

चक्कर लगाते हुए भाई अवश्य दिखाई दे सकते हैं, लेकिन लक्ष्मण जैसा नहीं?

यही तो संस्कार है जब हम बड़ों का आदर, सम्मान व चरण-स्पर्श करते हैं, आज्ञा का पालन कर उनके बताए मार्ग पर अग्रसर होते हैं। लेकिन विडम्बना यह है कि आज हम संस्कारों को अतीत के बस्ते में दफना चुके हैं तथा पाश्चात्य जगत की मधुर वेला में अपना सर्वस्व लुटाने पर आमादा हो चुके हैं जिनकी कोई संस्कृति नहीं कोई संस्कार नहीं, उन्हीं के पद चरणों पर हम चलकर अपने आपको मोडर्न व आधुनिकता की हूँक भरने लगे हैं।

ऐसा कहा गया है कि दुनिया में ईश्वर के 24 अवतार अब तक हुए हैं और सभी अवतार मात्र क्षत्रिय कुल में हुए हैं।

हमारा कैसा अहोभाग्य है कि हम उनके वंशज हैं जिनके अवतार हुए हैं और पूरा जगत उनको मानता है। लेकिन हम अपने आदर्शों, वचनों, कर्मों, धर्मों, मर्यादाओं, पवित्रता आदि बातों को धीरे-धीरे किनारा करते-करते अध: पतन की ओर सीना ताने आगे बढ़ रहे हैं। जिसमें हम अपनी आन, बान व शान समझ रहे हैं।

अब भी वक्त है हम अपने संस्कारों को पहचानने तथा जीव हत्या, शराब-कबाब, किसी भी प्रकार के नशे- पते से कोसों दूर रहें। अपनों से बड़ों का सम्मान करें। हमउम्र को गले लगावें तथा छोटों का लाड-प्यार व दुलार करें। उन्हें उचित व नेक सलाह दें। कोई ऐसा कृत्य न करें जिनसे उनके जीवन पर दुष्प्रभाव पड़े। गलत संगत से दूर रखें।

आधुनिक सुख-सुविधाओं का उपयोग अवश्य करें लेकिन मर्यादा का चीरहरण न करें। बच्चों को आधुनिक शिक्षा दें लेकिन अपने बड़ेरों के बताये मार्गों, संस्कारों व संस्कृति का उपहास न करें। दृढ़ता से अपनाएँ। उसे मजबूत करें।

अन्त में अपने-अपने माता-पिता, दादा-दादीसा, बुजुर्गगणों का सहारा बनें। सेवा सुश्रूषा करें। उनसे गुणों की बात सीखें। अपने मन मस्तिष्क में संजोयें। इस पर बाहरी आवरण न आने दें। अपने घर में सबसे बड़ा देवता माँ-बाप ही है। उनकी सेवा सुश्रूषा में कमी न रखें। उनके संस्कारों को अपनावें, जीवन में उतारें, उनके द्वारा संजोये रखी गई संस्कृति व धरोवर को आप तन-मन-धन से आगे आने वाली भावी पीढ़ी के लिए सुरक्षित रखें।

लोग कहते हैं कि बदलता है, जमाना अक्सर।
मगर क्षत्रिय वो है, जो जमाने को बदल डालते हैं।।

आप अपने आपको बदलो, एक रहो, संगठित रहो, आगे कदम बढ़ाओ। समय के साथ चलो। अपने प्रियजनों को इसमें सहयोग करो। टांग खिंचाई से बचो। बहकावे में मत आवो। मितव्ययी बनो। दिखावे से परहेज रखो। जितने भी अवगुण आपको नजर आते हैं, उन्हें सब आपस में मिल-जुलकर दूर करने का प्रयास करो। अपने होनहारों को कलम की ताकत में मजबूत कर विश्व स्तर पर पहुँचाने का सतत् सामूहिक प्रयास करें। संस्कार व संस्कृति के भाव नवयुवकों के जहन् में कूट-कूटकर भरने का बीड़ा उठावें। अपने संस्कार व संस्कृति को बचाने का भरसक प्रयास करें।

जय क्षात्र धर्म!

न जलने वाली ज्वाला

क्रोध तो है ऐसी न जलने वाली ज्वाला,
जिसमें क्रोधी स्वयं सबसे पहले जलता।
जल-भुन कर राख हुई साख को,
पछताता हुआ क्रोधी केवल हाथ मलता।।

– शम्भूसिंह 'अल्पज्ञ'

राजस्थानी साहित्य को समृद्ध करने वाले कालजयी कवि चन्द्रसिंह 'बिरकाली'

– भंवरसिंह मांडासी

राजस्थान की बालू रेत के टिब्बों से घिरी मरुभूमि की आग उगलती गर्मी, तीर-सी लगने वाली सर्दी और रिमझिम करती सुहावनी वर्षा की अनूठी प्रकृति ने अपने अंचल में अनेक सपूतों को जन्म दिया है। ऐसे ही कालजयी सपूतों में चन्द्रसिंह 'बिरकाली' का नाम है। जिन्होंने मायड़ भाषा राजस्थानी के साहित्य को समृद्ध कर, राजस्थान की अनूठी प्रकृति को देश के कोने-कोने में पहुँचाकर अमर कर दिया। गाँवों में, चौपालों, खेतों, पनघटों पर बोली जाने वाली भाषा में रचनाओं को जन्म देकर राजस्थानी साहित्य को समृद्ध करने वाले कालजयी कवि चन्द्रसिंह 'बिरकाली' का जन्म हनुमानगढ़ जिले की नोहर तहसील के 'बिरकाली' गाँव में 24 अगस्त, 1912 को एक साधारण राजपूत परिवार में हुआ था।

आप असाधारण राजस्थानी काव्य प्रतिभा के धनी थे। जिस प्रकार सम्राट विक्रमादित्य एक विशेष सिंघासन पर बैठकर ही न्याय किया करते थे। उस सिंघासन पर विराजते ही विक्रमादित्य में न्याय करने की एक विलक्षण न्यायिक प्रतिभा का उदय व संचार हो जाता था। उसी प्रकार से चन्द्रसिंह भी अपने गाँव बिरकाली के एक ऊँचे रेतीले टिब्बे पर बैठकर रचनाओं का सृजन किया करते थे। इस टिब्बे पर बैठने के पश्चात् ही सरस्वती उनकी जिह्वा पर बिराजती तथा स्वत: ही राजस्थानी भाषा की रचनाएँ उनके श्रीमुख से वाणी के रूप में प्रस्फुटित होती।

इस टिब्बे पर बैठकर राजस्थानी भाषा के चहेते इटली के डॉ. एल.पी. टेस्सीटोरी से बिरकाली जी की भेंट हुई थी। ज्ञात रहे डॉ. टेस्सीटोरी एक इटालियन थे तथा बीकानेर क्षेत्र में इन्होंने दूर-दराज में घूम-घूमकर इस क्षेत्र का गहराई से अध्ययन किया। कई ग्रन्थ लिखे जो आज भी बीकानेर के अभिलेखागार में उपलब्ध हैं। इन्होंने बीकानेर रियासत के क्षेत्र को अपनी कर्म स्थली बनाया तथा यहाँ के जन जीवन का गहराई से अध्ययन किया। वे हिन्दी भाषा व राजस्थानी भाषा के अच्छे जानकार थे। इनको राजस्थानी भाषा अतिप्रिय थी इसी कारण से इन्होंने चन्द्रसिंह बिरकाली से राजस्थानी भाषा का कवि होने के नाते मुलाकात की थी। डॉ. टैस्सी टोरी का अन्तिम समय बीकानेर में ही गुजरा तथा यहीं पर उसकी मृत्यु हुई। बीकानेर क्षेत्र के लिए की गई उनकी सेवाओं को चिरस्थाई बनाने के लिए उनकी याद में बीकानेर में पब्लिक पार्क के पास आज भी ''टैस्सी-टोरी'' पार्क बना हुआ है।

'बादली' और 'लू' चन्द्रसिंह बिरकाली की दो महान काव्य रचनाएँ हैं। जिन्होंने सारे देश का ध्यान राजस्थान की ओर आकर्षित किया। प्रो. इन्द्र कुमार शर्मा ने 'बादली' और 'लू' का अंग्रेजी भाषा में अनुवाद किया था। इनके अलावा 'डांफर', 'कॉलजे री कौर', 'मेघदूत' व 'जफरनामों' भी चन्द्रसिंह जी की महत्त्वपूर्ण रचनाएँ हैं।

उनकी महत्त्वपूर्ण रचना 'लू' का अन्तिम दोहा निम्न प्रकार है –

जीवण दाता बादल्यां थांसूं जीवण पाय
भल लूंआ बाजो किती मुरधर सहसी लाय

अर्थ- मरुधरा को जीवन प्रदान करने वाली बादलियाँ भी तुमसे (लू से) अपना जीवन प्राप्त करती हैं, अत: लूं ओ, चाहे जितनी चलो, मरुधरा तुम्हारे ताप को स्वेच्छा से सहन करेगी। चन्द्रसिंह बिरकाली 80 वर्ष तक जिये परन्तु

(शेष पृष्ठ 32 पर)

गतांक से आगे

आदर्श और अनूठे गाँव

– कर्नल हिम्मतसिंह

रघुराजपुर (औडिशा): शिल्प गाँव

रघुराजपुर, ओडिशा प्रान्त के पुरी जिला मुख्यालय से 14 किलोमीटर की दूरी पर भार्गवी नदी के दक्षिणी तट पर स्थित है। यह गाँव नारियल, ताड़, खजूर, आम और कटहल के पेड़ों के झुंडों के बीच बसा हुआ है। 120 घरों की आबादी वाला यह गाँव सदैव भित्ती चित्रों से सजा रहता है, जहाँ शिल्पी और कलाकर अपना अभ्यास करते पाये जाते हैं। यह गाँव अपनी पारम्परिक पटचित्र, शिल्प और ओडिशी नृत्य कला के लिए प्रसिद्ध है और बतौर शिल्प ग्राम अपनी पहचान बनाये हुये है।

रघुराजपुर, प्रसिद्ध गुरू केलुचरन महपात्रा का जन्म स्थान होने के साथ ही विभिन्न रोचक कलाओं का केन्द्र भी है। यहाँ के पटचित्र कला के कलाकारों ने और गोतीपुरा नृत्य मंडली ने देश विदेश में अपनी पहचान बनाई है।

यह गाँव टस्सर पेंटिंग, पामलीफ एन्ग्रेविंग, लकड़ी और पत्थर की खुदाई और नक्काशी, मूर्तीकला, पटचित्र कला, मुखौटा और भिन्न भिन्न चीजों से बने खिलौनों का भी घर है। इस गाँव में अनेक मंदिर हैं जो भुआसुनी के अलावा राधामोहन, गोपीनाथ, रघुनाथ, लक्ष्मीनारायण और गौरंगा आदि देवी देवताओं को समर्पित हैं।

सन् 2000 में INTACH– ने इस गाँव को शिल्प ग्राम के रूप में विकसित करने के लिये चुना है। इस गाँव को राज्य का पहला हेरिटेज गाँव घोषित किये जाने का गौरव प्राप्त है। जैसे ही यह घोषणा हुई, तुरन्त वहाँ पर भाषा अनुवाद केन्द्र स्थापित किया गया और क्राफ्ट और शिल्प ग्राम को दी जाने वाली सभी सुविधाएं मुहैया कराई गई।

अब तो यह गाँव एक महत्वूपर्ण ''ग्रामीण पर्यटन स्थल'' के रूप में विकसित हो गया है जहाँ पर देशी और विदेशी सैलानियों का आवागमन बना ही रहता है और तब से यह अपने क्षेत्र का हेरिटेज पर्यटन का अनुकरणीय नमूना बन गया है।

रघुराजपुर वार्षिक बसंत उत्सव का भी केन्द्र बन गया है। स्टेट टूरिज्म ने सबसे पहले वार्षिक बसंत उत्सव का आयोजन 1993 में किया था। इसका आयोजन अब हर वर्ष फरवरी मार्च के महिने में किया जाता है तब पर्यटक भारी संख्या में यहाँ आते हैं।

पट्टचित्र पेंटिग्स कपड़े के टुकड़े पर की जाती है। यह पाम के सूखे पत्तों पर भी की जा सकती है। पहले कपड़े पर चाक और गोंद के मिश्रण से पुताई की जाती है फिर देवताओं और पौराणिक दृश्यों को बहुत ही सुन्दर सजावट के साथ रंग बिरंगे रंगों से पेंट किया जाता है।

पट्टचित्र के चित्रों को मनमोहक और जीवन्त बनाने के लिए पेड़-पौधे, फूल-पत्तों और जानवरों के चित्र भी पेंट किये जाते हैं।

टस्सर साड़ी विशेषकर सम्बलपुरी साड़ियों पर मथुरा विजय, रासलीला और अयोध्या विजय के दृश्यों का चित्रण किया जाता है उनकी शुरुआत यहीं से हुई मानी जाती है।

रघुराजपुर हेरिटेज क्राफ्ट गाँव राज्य के लिये राजस्व का एक महत्त्वपूर्ण स्त्रोत बना वहीं रोजगार सृजन का भी एक आदर्श बनकर उभरा है, साथ ही पारम्परिक कला को संरक्षण और विकसित करने में भी अहम भूमिका निभा रहा है।

सुखोमाजरी (हरियाणा)

पर्यावरण संरक्षण का मॉडल

सुखना लेक पंजाब और हरियाणा की राजधानी चंडीगढ़ की सुंदरता को तो चार चाँद लगाती ही है साथ

ही चंडीगढ़ वासियों के जीवन का अभिन्न अंग भी है। हिमालय की पर्वत श्रृंखला से जंगलों के धीरे-धीरे नष्ट होने से पहाड़ी चोटियाँ वन रहित हो गई और वर्षा के कारण यहाँ मिट्टी के कटाव ने सुखना के भराव क्षेत्र को प्रभावित किया। इस सिल्टिंग की समस्या के समाधान ने लोगों का ध्यान हरियाणा राज्य के पंचकुला में हिमालय की पर्वत श्रृंखला के बीच स्थित एक छोटे से गाँव सुखोमाजरी की तरफ आकर्षित किया।

सुखोमाजरी गुर्जरों का गाँव है जिसकी आबादी लगभग 1500 है। यहाँ के निवासी पेशे से पशुपालक और कृषक रहे हैं। यह गाँव लम्बे अर्से से जन भागीदारी के द्वारा पारिस्थितिक संरक्षण और उससे सुधरी आर्थिक स्थिति की दास्तान बयान कर रहा है।

इस गाँव ने सत्तर के दशक के उत्तरार्ध में केन्द्रीय मृदा और जल संरक्षण अनुसंधान और प्रशिक्षण संस्थान चंडीगढ़ के सहयोग से वन प्रबंधन कर अपनी नसीब बदलने में सफलता अर्जित की है। इस संस्थान के उस समय के प्रमुख श्री पी. आर. मिश्रा ने किसानों को प्रोत्साहित किया कि वे जंगलों में व्यापक चराई और वर्षा आधारित खेती को त्यागकर वन संरक्षण और सिंचाई के लिए वर्षा जल का संचय करें ताकि उनकी आमदनी कई गुणा बढ़ सके।

अस्सी के दशक में यह गाँव जल विभाजन प्रबंधन के आदर्श के रूप में उभरा, खूब सुर्खियाँ बटोरी और सिद्ध कर दिया कि जन भागीदारी से सब कुछ प्राप्त किया जा सकता है।

सुखना लेक में सिल्टिंग की समस्या के निदान और सिंचाई के लिये पानी की उपलब्धता के लिये चार चैक डैम्स का निर्माण करवाया गया। पानी की उपलब्धता बढ़ी तो कृषि की पैदावार में भी सराहनीय वृद्धि हुई जिसने लोगों की सोच को बदला और तब इस प्रयोग के प्रणेता श्री मिश्रा को अपना सहयोग देने लगे। कृषि की पैदावार जो 1977 में 6.83 क्विंटल प्रति हेक्टेयर थी वो 1986 में बढ़कर 14.32 क्विंटल प्रति हेक्टेयर हो गई। खैर की लकड़ी से प्राप्त कत्था जिसका अर्क दवाईयों, पान और प्राकृतिक रंग बनाने में काम आता है उसके विक्रय और भब्बर ग्रास से होने वाली पैदावार ने ग्रामवासियों को आर्थिक दृष्टि से समृद्ध बना दिया। हरे चारे की उपलब्धता ने डेयरी व्यवसाय के विस्तार में मदद की।

इन प्रयासों ने शिवालिक की पहाड़ियों में मिट्टी के कटाव को रोक सुखना लेक में सिल्ट डिपॉजिट की रोकथाम मे भी आशानुकूल परिणाम अर्जित किये। रालेगाँव, हिवरे बाजार और सुखोमाजरी का अनुभव विश्वास दिलाने के लिये पर्याप्त है कि धरती हमारी आवश्यकताओं को पूरा कर सकती है, लालच को नहीं।

वाटर शेड के सभी काम प्रकृति के महत्त्वपूर्ण घटकों को बेहतर बनाते हैं। इसलिये कहा जा सकता है कि कुदरत के नियमों को सम्मान देकर सतत विकास का रास्ता है, इसलिये वाटरशेड प्रबंधन का बीच वाक्य है 'लक्ष्य' होना चाहिये अविवेकी हस्तक्षेप के कारण होने वाले पर्यावरणीय खतरों से बचाता है- वाटरशेड प्रबंधन।

तिलोनिया राजस्थान

बेयरफुट कॉलेज (सामाजिक कार्य और अनुसंधान केन्द्र)

तिलोनिया राजस्थान राज्य के अजमेर जिले की किशनगढ़ तहसील का एक प्रगतिशील गाँव हैं, जहाँ सन् 1972 से श्री बंकर रॉय और उनकी धर्म पत्नी अरूणा रॉय, एक सामाजिक कार्य एवं अनुसंधान केन्द्र एस डब्ल्यू आर सी नामक स्वयंसेवी संगठन संचालित कर रहे हैं। बेयरफुट कॉलेज जो इस संस्था का स्थूल स्वरूप है वह भारत का ही नहीं अपितु दुनिया का एक अनोखा शिक्षण संस्थान है।

इस संस्थान की स्थापना 1972 में तिलोनिया में की गई। बेयरफुट का कार्य एक सिद्ध समुदाय के मॉडल पर आधारित है। जिसके द्वारा वैश्विक गरीबी को कम करने के

उद्देश्य से सुदूरवर्ती और ग्रामीण इलाकों में ऊर्जा और पेयजल की मूलभूत सुविधाएँ उपलब्ध कराई जाती हैं।

सन् 2015 में संयुक्त राष्ट्र ने सतत् विकास के लिये 17 लक्ष्य निर्धारित किये थे। बेयरफुट कॉलेज इनमें से 14 को पाने का रास्ता दिखाता है। कॉलेज में दो कैम्पस हैं और उनमें अनेक कार्यक्रम चलते हैं। जिनके तहत देश विदेश के गरीब लोगों से जुड़े विभिन्न कार्य होते हैं।

संस्था के कार्यों के परिणाम स्वरूप लाखों लीटर बारिश के पानी को संरक्षित कर उसे पीने लायक बनाकर पूरे विश्व में हमारे समुदायों के लाखों स्कूली बच्चों के पीने के लिये उपलब्ध कराया जाता है सन् 2003 में बंकर रॉय ने अपनी संस्था के लक्ष्यों को हाँसिल करने के लिए वर्षा जल संग्रहण के साथ ही नारी सशक्तिकरण की दिशा में गरीब, अनपढ़ ग्रामीण महिलाओं को सौर ऊर्जा सम्बन्धित कौशल में पारंगत बनाने के लिये प्रशिक्षण देना प्रारम्भ किया। केवल महिलाओं को इस कौशल के लिये चुनने के पीछे सोच यह रही कि पुरुष तो शीघ्र ही धैर्य खोकर रोजगार के लिये पलायन कर जाते हैं। औरतों में धैर्य अधिक होता है और वे किसी भी कौशल को आसानी से सीख लेती हैं। क्योंकि वे गरीब परिवारों से आती हैं इसलिये वे गाँव में टिक कर रहेंगी और अपने समुदायों के लिये हितकारी सिद्ध होंगी।

कॉलेज में हर वर्ष छः महिने की अवधि के दो बैचों को सौर ऊर्जा का प्रशिक्षण दिया जाता है। एक बैच भारतीय महिलाओं का और दूसरा विदेशी महिलाओं का होता है। ये महिलायें देश-विदेश के कुछ ऐसे पिछड़े गाँवों से आती हैं जिन्होंने कभी बिजली और कृत्रिम रोशनी नहीं देखी है।

सोलर मम्मास कही जाने वाली महिलाओं को छः महिने के प्रशिक्षण से सोलर इंजीनियर बना दिया जाता है जिससे वे वापस जाकर अपने पूरे गाँव को रोशन कर सकती है। अक्सर जब वो वापस अपने-अपने गाँव जाती हैं तो सौर ऊर्जा संयत्रों से गाँव को प्रकाशमान कर देती हैं। रात के समय लाईट होने से महिलायें अपना काम कर सकती हैं और बच्चे पढ़ सकते हैं।

यहाँ से प्रशिक्षित सोलर इंजीनियरों में 500 विदेशी महिलायें बेयरफुट इंजीनियर्स में शामिल हैं जिन्होंने असंख्य घरों का अंधेरा मिटाया है यहाँ से बनाये उपकरण हर दिन 151315 वॉट सोलर ऊर्जा का उत्पादन करते हैं।

सन् 2004 में यहाँ बनी लाईट पहली बार विदेशों तक पहुँची और 2008 से विदेश मंत्रालय के भारतीय तकनीकी व आर्थिक सहयोग के अंतर्गत अफ्रीका के 15 देशों की महिलाओं को प्रशिक्षण दिया जाता है। भारत, अफ्रीका, लैटिन अमेरीका, प्रशांत महासागर और एशिया क्षेत्र के हजारों समुदायों के लाखों लोगों को स्वच्छ ऊर्जा उपलब्ध करायी जा रही है। धरेलू सौर ऊर्जा प्रणाली का उपयोग 54 से अधिक देशों में किया जा रहा है।

शिक्षा के क्षेत्र में यह संस्था तीन प्रकार के स्कूल संचालित कर रही है। शिक्षा निकेतन (दिन के समय), रात्रि स्कूल एवं और ऊर्जा सेतु स्कूल। पाठशालाएँ साफ-सुथरी हैं जहाँ विद्यार्थी आँगन पर बैठते हैं। स्कूलों में वाई-फाई, आइपैड्स की सुविधा उपलब्ध है। ये सुविधायें दानदाताओं ने उपलब्ध कराई हैं।

रात्रि स्कूल, संस्थान द्वारा राजस्थान, ओडिशा, आंध्रप्रदेश और बिहार में संचालित किये जा रहे हैं। यहाँ के स्कूल सौर ऊर्जा से प्रकाशमान हैं। बहुत से रात्रि स्कूलों के पास एप्पल टी. वी. और आइपैड्स उपलब्ध हैं। रात्रि स्कूलों में ग्वालों और गरीब पशु पालकों के बच्चे पढ़ने आते हैं, क्योंकि दिन के समय इनको पशु चराने और खेत पर काम करने जाना पड़ता है। इन बच्चों की आयु 06 से 14 वर्ष होती है और ये पढ़ाई में बड़ी दिलचस्पी लेते हैं। इन स्कूलें में प्रशिक्षण गैर परम्परागत तरीकों से दिया जाता है। यहाँ के शिक्षक देहात के नौजवान हैं जिनको बेयरफुट ने प्रशिक्षित किया है। बच्चे जितनी तनमयता से पढ़ते हैं,

उनके शिक्षक उत्साह और समर्पण भाव से अपना दायित्व निभाते हैं।

एप्पल की वातावरण नीति और सामाजिक पहल से सम्बन्ध रखने वाली वाईस प्रेसिडेन्ट लीसा पी जैक्शन जो टीम कुक की प्रतिनिधित्व करती हैं ने संस्थान का 19 मई, 2016 को निरीक्षण किया और बहुत प्रभावित हुई।

यहाँ पर ग्रामीण औरतें निपुण कारीगरों और शिल्पकारों की देख रेख में अनेक कला कृतियाँ भी बनाती है।

यहाँ पर कपड़े के बने नोटबुक, कवर, पेन स्टैण्ड, पाउचेज, आइपैड कवर्स, थैले, टेबल क्लोथ, नैपकिंस, मैट्रेस, वाल पेंटिंग, दुपट्टा और साड़ियों की बडे शहरों और विदेशों में बड़ी भारी माँग रहती है। यहाँ बने फर्नीचर, चमड़े और धातु के आर्टिकल्स, खिलौने और कठपुतलियाँ भी बहुत प्रसिद्ध हैं। हैण्डलूम के सामान की बिक्री से भी ग्रामीण औरतों को अतिरिक्त आमदनी होती है।

बेयरफुट कॉलेज के प्रयासों से ग्रामवासियों की सोच में भारी बदलाव आया है। उनमें विश्वास पैदा हुआ है कि वे भी धीरे-धीरे अपनी जिन्दगी में बदलाव ला सकते हैं, चाहे सोलर पावर हो, वर्षा के पानी का संग्रहण हो, कबाड़ से जुगाड़ या फिर शिक्षा की बात हो।

संस्था के प्रयास उन लोगों का जीवन बदल रहे हैं, जहाँ तरक्की की सम्भावनाएँ संसाधनों के अभाव और संसाधनों और दिशा-हीनता के कारण दम तोड़ देती थी। आज वहीं विकास गतिमान है। बेयरफुट कॉलेज ने अब तक तीन लाख से अधिक ग्रामीण इंजीनियरों, शिक्षकों, मीडवाइफ बुनकरों, दस्तकारों, डॉक्टरों को प्रशिक्षित किया है।

भिलार गाँव (महाराष्ट्र)

देश का पहला पुस्तक गाँव

महाराष्ट्र में सतारा जिले का भिलार गाँव देश का पहला पुस्तक गाँव बन गया है। इसका उद्घाटन 04 मई, 2017 को राज्य के मुख्यमंत्री देवेन्द्र फड़नवीस ने किया। शिक्षा मंत्री विनोद तावड़े के नेतृत्व में राज्य सरकार की इस पुस्तक गाँव योजना को मराठी भाषा विभाग के सहयोग से पूरा किया गया है।

इस गाँव में पुस्तकें पढ़ने के लिये 25 स्थान चुने गये हैं जिनमें साहित्य, कविता, धर्म, महिला, बच्चों, इतिहास, पर्यावरण, लोक साहित्य, जीवन और आत्मकथाओं की किताबें उपलब्ध होंगी।

पुस्तक गाँव परियोजना ब्रिटेन के वेल्स शहर के हे-ऑन-वे से प्रभावित है। हे-ऑन-वे के ही तर्ज पर भिलार गाँव में करीब 15 हजार पुस्तकें उपलब्ध कराई जा चुकी हैं। सतारा जिले का यह गाँव महाबलेश्वर हिल स्टेशन के पास सुन्दर पंचगनी पहाड़ी क्षेत्र के प्राकृतिक वातावरण में स्थित है।

इस गाँव को पुस्तक गाँव के रूप में तैयार करने के लिये गाँव के 40 लोगों ने इच्छा जताई थी, जिनमें से फिलहाल 25 घरों का चयन किया गया है। जिन घरों में जिस विषय से सम्बन्धित पुस्तकें रखी गयी हैं उसके बाहर उस विषय से सम्बन्धित साहित्यकारों के चित्र भी लगाये गये हैं। इन मकानों में पाठकों के बैठने का इंतजाम किया गया है। कुछ मकानों में पाठकों के ठहरने और खाने का भी इंतजाम है। गाँव में दो रेस्टोरेन्ट भी हैं।

अब सरकार गाँव में साहित्य महोत्सव कराने की योजना बना रही है। शिक्षा मंत्री विनोद तावड़े का कहना है मराठी की करीब 15,000 पुस्तकें इस गाँव के परिसर में अभी उपलब्ध कराई जा रही हैं, लेकिन बहुत सारे प्रकाशकों ने इस पुस्तक गाँव के लिये पुस्तकें भेंट करने की इच्छा जाहिर की है।

राज्य सरकार ने मराठी भाषा दिवस पर 27 फरवरी, 2015 को इस तरह के पुस्तक गाँव और साहित्य उत्सव आयोजित करने की योजना का ऐलान किया था। शिक्षामंत्री ने बताया कि यह परियोजना खास उन लोगों के लिये है, जिन्हें भाषा और साहित्य से प्रेम है। **(क्रमशः)**

अपनी बात

बीज फूल बन सकता है, पर बीज फूल बने ही यह अनिवार्य नहीं है। बीज बीज की भाँति मर भी सकता है। बीज बीज की भाँति सड़-गल भी सकता है। सभी बीज फूल नहीं हो जाते, पर सभी बीज फूल हो सकते थे, ऐसी सम्भावना तो है।

यही स्थिति मनुष्य की है। मनुष्य एक सम्भावना है, एक बीज है, फूल नहीं। सभी मनुष्य प्राप्त पुरुष हो सकते हैं, यह सभी के लिए सम्भावना है। सभी के भीतर परमात्मा का अवतरण हो सकता है। लेकिन सभी प्राप्त पुरुष हो नहीं पाते, इसे भूल नहीं सकते।

जन्म से कोई प्राप्त पुरुष नहीं होता। प्राप्त करना तो एक यात्रा है। जन्म और मृत्यु के बीच एक महा अवसर है, उसका जो सम्यक उपयोग कर लेगा उसे प्राप्ति हो सकती है। सम्यक उपयोगिता के परिणामस्वरूप अस्तित्व के द्वारा दिया गया पुरस्कार है प्राप्ति। ऐसे ही धक्के खाते-खाते कोई परमतत्व को प्राप्त नहीं कर सकता। इसके लिए तो संकल्प चाहिए, समर्पण चाहिए, संघर्ष चाहिए, साधना चाहिए। साधना की प्रक्रिया से गुजरे बिना बीज बीज ही रह जाता है। बीज भूमि में पड़े, भूमि में गले, मिटाए अपने आपको तो अंकुरण होता है।

इसी प्रकार व्यक्ति को भी साधना की भूमि चाहिए- गले, मिटाये अपने आप को। राख कर दे अपने अहंकार को। अपनी अस्मिता को पोंछ डाले। तब अंकुरण होता है-अपूर्व प्रसाद का, अपूर्व आनन्द का। जब तक उस अंकुरण को उपलब्ध न हो जाए तो समझ लें कि जन्मे तो जरूर पर अभी जीवन नहीं मिला। इस बात को एक क्षण भी न भूलें, क्योंकि जितने क्षण भूले गए, भूल में गए, वे सब व्यर्थ गये। सोते-जागते यह स्मरण रखना है कि जिन्दगी के हाथ से समय की धारा बही जाती है। कौन जाने आने वाले क्षण मौत द्वार पर दस्तक दे। इसलिए हमारा तो यही प्रयास रहे कि मौत आए उससे पहले प्राप्ति कर सकें तभी यह जीवन सार्थक है।

ऐसा संकल्प सघन संकल्प करें। ऐसी अभीप्सा जागृत करें। तभी जीवन सार्थक होगा, तभी मानें कि जन्म हुआ है। यह दूसरा जन्म है। पहला जन्म तो नाममात्र का जन्म है। वह तो जीवन की भूमिका मात्र है। क, ख, ग इसे ही सब कुछ न समझ लें। इस क, ख, ग से, इस वर्णमाला से वेद का निर्माण किया जा सकता है, उपनिषदों का जन्म हो सकता है। गीता आविर्भूत होती है उसी वर्णमाला से। पर यह भी ध्यान रहे कि जिस वर्णमाला से उपनिषदों के अमृत वचन पैदा होते हैं, उसी वर्णमाला से गालियाँ भी निर्मित हो जाती हैं, वर्णमाला वही है।

जिस जीवन की सम्पदा को कुछ लोग प्राप्ति के अमृत में बदल लेते हैं, तो कुछ लोग उसी अमृत की सम्भावना को जहर में बदल लेते हैं। अधिक लोग दुखी दिखाई देते हैं, उन्होंने अपने जीवन को जहर में बदल लिया है। अधिक लोग दुखी रहकर ही जीते हैं, दुखी ही समाप्त हो जाते हैं। उनके जीवन में कांटों के अतिरिक्त न कोई फूल खिलते, न कोई सुवास उठती। उनके अंतरंग में कभी कोई पक्षी गीत नहीं गाते। उनकी जीवन वीणा ऐसी ही पड़ी रह जाती है, वे कभी उसका तार नहीं छेड़ पाते।

हम श्री क्षत्रिय युवक संघ की साधना में उतरे हैं तो यही याद रखना है, सतत् रूप से याद रखना है कि यह एक अमूल्य अवसर है, उसे खो न दें। उतारो अपने जीवन में संघ साधना को। साधना में लगन से उतरना, एकनिष्ठता से अपनाना, यह परमेश्वर को पुकार है कि मेरा खाली घर रोशन हो जाए, मेरा खाली घड़ा भर जाए। साधना के मार्ग पर कदम बढते रहें तो चमत्कार भी हो सकता है। ऐसा चमत्कार जिसके आगे सांसारिक चमत्कार फीके पड़ जाएँ। हमारी छोटी-सी गागर में उसका पूरा सागर भर सकता है।

हम छोटे-छोटे दिखाई देते हैं। बीज कितना छोटा होता है, पर कितने बड़े वृक्ष को छिपाए होता है। बीज कोई एक ही वृक्ष को थोड़े ही छिपाए होता है, एक बीज से एक वृक्ष लगेगा, उस वृक्ष में अनन्त बीज लगेंगे, अनन्त बीजों से अनन्त वृक्ष लगेंगे और अनन्त वृक्षों में भी अनन्त-अनन्त बीज लगेंगे। एक बीज में इतनी क्षमता है कि चारों ओर हरियाली भर दे। एक बीज फैलता जाए, अवसर का उपयोग करता जाए, संभावनाओं को वास्तविकता बनाता जाए, धारा बहती रहे तो गंगा जैसे सागर में पहुँच जाती है, ऐसे ही व्यक्ति परमात्मा में पहुँच जाता है। इसलिए अपना लें साधना को, संकल्प को जागृत करें, समर्पित हो जाएं, अभीप्सा के साथ जीवन चल पड़े इसी साधना पर, बहता जाए यह भाव धारा बनाता हुआ तो प्राप्ति भी होगी। संघ साधना जीवन को सार्थक बना देगी। बीज पुष्प बन जाएगा।

●

पृष्ठ 26 का शेष

राजस्थानी साहित्य को समृद्ध करने वाले कालजयी कवि चन्द्रसिंह 'बिरकाली'

वे कुछ वर्ष तक और जीना चाहते थे। एक तो वे बाल्मीकि रचित रामायण का राजस्थानी में अनुवाद करना चाहते थे तथा अपने पैतृक गाँव बिरकाली में राजस्थानी भाषा का एक शोध केन्द्र भी खोलना चाहते थे। मायड भाषा के इस सपूत के अमरत्व प्राप्त करने से सात दिन पूर्व आकाशवाणी सूरतगढ़ ने एक साक्षात्कार लिया था जो आज इतिहास बन गया है। उन्होंने राजस्थानी भाषा को मान्यता देने के प्रयत्नों के बारे में कहा कि इसमें राजनीति घुस गई है। चन्द्रसिंह बिरकाली 14 सितम्बर, 1992 को इस असार संसार को छोड़कर अमरत्त्व को प्राप्त हो गये। जीवन के अन्तिम पड़ाव में 11 वर्ष तक वे अपने गाँव बिरकाली में ही रहे।

राजस्थान के सपूत राजस्थानी भाषा के रचनाकार व राजस्थानी भाषा को अपनी काव्य रचनाओं के माध्यम से समृद्ध बनाकर नई ऊँचाईयों तक पहुँचाने वाले व राजस्थानी भाषा को संवैधानिक मान्यता दिलाने के लिए प्रयासरत रहे इस महान् पुरौधा कवि चन्द्रसिंह बिरकाली को शत् शत् शत् नमन्।

●

मृत्यु से अभय

एक युवा सन्यासी था। उस पर एक राजकुमारी मोहित हो गई। राजा को पता चला तो उसने संन्यासी से राजकुमारी के साथ विवाह करने को कहा। संन्यासी बोला-मैं तो हूँ ही नहीं। विवाह कौन करेगा?

संन्यासी की यह बात सुनकर राजा ने अपने को बड़ा अपमानित अनुभव किया। उसने अपने मंत्री को आदेश दिया कि उसे तलवार से मार डाली जाए। संन्यासी उसके आदेश पर बोला शरीर के साथ मेरा आरम्भ से ही कोई सम्बन्ध नहीं रहा। जो अलग ही है, आपकी तलवार उन्हें और क्या अलग करेगी। मैं तैयार हूँ और आप जिले मेरा सिर कहते हैं, उसे काटने के लिए उसी प्रकार आमंत्रित करता हूँ, जैसे वसंत की यह वायु पेड़ों से उनके फूलों को गिरा रही है।

वह मौसम सचमुच वसंत का था और पेड़ों से फूल गिर रहे थे। राजा ने उन फूलों को देखा, और देखा मौत को सामने उपस्थित जानते हुए भी उस संन्यासी की आनंदित आँखों को। उसने एक क्षण सोचा-जो मृत्यु से भयभीत नहीं है और जो मृत्यु को भी जीवन की भाँति स्वीकार करता है, उसे मारना व्यर्थ है। उसे तो मृत्यु भी नहीं मार सकती।

राजा ने अपना आदेश तुरन्त वापस ले लिया।

शिविर सूचना

यह सूचित करते हुए अत्यन्त हर्ष है कि श्री क्षत्रिय युवक संघ के आगामी प्रशिक्षण शिविर निम्न प्रकार से होने जा रहे हैं -

क्र.सं.	शिविर	समय	स्थान, मार्ग आदि
01.	प्रा.प्र.शि. (बालिका)	7.9.2024 से 10.9.2024 तक	खानपुर (नागौर)
02.	प्रा.प्र.शि.	12.9.2024 से 15.9.2024 तक	श्री हनुमान जी की बगीची बाला, तह. आहोर, जिला-जालौर (बिशनगढ़ एवं भाद्राजून से बसों की सुविधा है।) **संपर्क सूत्र-** बृजपाल सिंह बाला- 8094092013 राजेन्द्र सिंह भवराणी- 9413123738
03.	प्रा.प्र.शि.	12.9.2024 से 15.9.2024 तक	श्री लोलेश्वर महादेव मंदिर दासपां, तह.-भीनमाल, जिला-जालौर (भीनमाल बागोडा व सायला से बसों की सुविधा है।) **संपर्क सूत्र-** भैरूंपाल सिंह दासपा- 9769218714 चंदन सिंह कावतरा- 8058853853
04.	प्रा.प्र.शि. (बालिका)	13.9.2024 से 16.9.2024 तक	श्री राम बल्लू जी राजपूत छात्रावास सांचौर **संपर्क सूत्र-** सरूप सिंह केरिया- 9549652662 प्रेम सिंह अचलपुर- 9828099602
05.	प्रा.प्र.शि. (बालिका)	13.9.224 से 16.9.2024 तक	पिथोरा गार्डन, जोधपुर
06.	प्रा.प्र.शि. से	13.9.2024 से 16.9.2024 तक	मोटाई, जिला-फलौदी
07.	प्रा.प्र.शि.	13.9.2024 से 16.9.2024 तक	कुड़. तह. भोपालगढ़
08.	प्रा.प्र.शि.	13.9.2024 से 16.9.2024 तक	जोधासर, प्रान्त-श्रीडूंगरगढ़ (जयपुर-बीकानेर राष्ट्रीय राजमार्ग-11 पर स्थित है। **संपर्क सूत्र-** 9001772703, 9783781111
09.	प्रा.प्र.शि. (बालिका)	13.9.2024 से 16.9.2024 तक	मोरखाणा, प्रान्त-नोखा (नोखा व बीकानेर से बसें उपलब्ध हैं।) **संपर्क सूत्र-** भंवर सिंह मोरखाणा- 9928514502
10.	प्रा.प्र.शि.	13.9.2024 से 16.9.2024 तक	बादरे जी की ढाणी, वांकलपुरा, महाबार (बाड़मेर से नोखड़ा सड़क मार्ग पर स्थित)
11.	प्रा.प्र.शि.	13.9.2024 से 16.9.2024 तक	मेदुसर, गडरारोड़, बाड़मेर
12.	प्रा.प्र.शि.	13.9.2024 से 16.9.2024 तक	गौड़ा, सेड़वा, जिल-बाड़मेर

13.	प्रा.प्र.शि.	13.9.2024 से 16.9.2024 तक	महारानी पब्लिक स्कूल, दांतिल रोड़, खड़ब, नारेहेड़ा पाटन, पावटा, अजीतगढ़ से नारेहेड़ा के साधन उपलब्ध हैं।
14.	प्रा.प्र.शि.	13.9.2024 से 16.9.2024 तक	हरियासर (जैसलमेर)
15.	प्रा.प्र.शि.	13.9.2024 से 16.9.2024 तक	भोपा (जैसलमेर)
16.	प्रा.प्र.शि.	14.9.2024 से 16.9.2024 तक	तावी, तहसील-लखतर, जिला-सुरेन्द्रनगर (गुजरात) **संपर्क सूत्र-** 9825403101
17.	प्रा.प्र.शि. (बालिका)	14.9.2024 से 16.9.2024 तक	काणेटी, तहसील-साणंद, जिला-अहमदाबाद (गुजरात) संपर्क सूत्र- 8140312421
18.	प्रा.प्र.शि.	14.9.2024 से 17.9.2024 तक	मेमदपुर, तहसील-वडगाम, जिला-बनासकांठा (गुजरात)
19.	प्रा.प्र.शि.	14.9.2024 से 17.9.2024 तक	भेंसाणा, तहसील-मेहसाणा, जिला-मेहसाणा (गुजरात)
20.	प्रा.प्र.शि. (बालिका)	14.9.2024 से 17.9.2024 तक	कामली, तहसील-ऊंझा, जिला-मेहसाणा (गुजरात)
21.	प्रा.प्र.शि.	14.10.2024 से 17.10.2024 तक	बिजनौर (उ.प्र.)
22.	प्रा.प्र.शि.	10.10.2024 से 13.10.2024 तक	गजसिंह का गाँव (जैसलमेर)
23.	प्रा.प्र.शि.	10.10.2024 से 13.10.2024 तक	टावरीवाला (जैसलमेर)
24.	प्रा.प्र.शि. (बालिका)	10.10.2024 से 13.10.2024 तक	पीलवा (फलौदी)
25.	प्रा.प्र.शि. (बालिका)	11.10.2024 से 14.10.2024 तक	आलोक आश्रम (बाड़मेर)

गजेन्द्र सिंह आऊ

शिविर कार्यालय प्रमुख (श्री क्षत्रिय युवक संघ)

बड़े वंश से क्या होता है खोटे हों यदि काम?
नर का गुण उज्ज्वल चरित्र है नहीं वंश, धन, धाम।

– रामधारी सिंह दिनकर

Manufacturer of Mattresses : Sofa Set & Furniture
Vision Comfort Line+ Mattress
स्प्रिंग मैट्रेस
HARSH CORPORATIONS
68 Giriraj Nagar, Govindpura, Kalwar Road, Jaipur +91 97173 59655
Nanda Sales
"AA" Class Govt. Contractor PHED & JDA
SPECIALIST IN ALL WATER PIPELINE PROJECT, BUILDING, ROAD WORK
Nand Kishor (Ashok Swami)
Durga Lal
Mob. +91 9314054800,
+91 9314517014
Phone : 0141-2225982
Email : nanda4800@yahoo.com
Shop No. 24 Ambay Market, Ajmer Road, Jaipur

श्री क्षत्रिय युवक संघ के स्वयंसेवक रूपसिंह परेऊ को राजस्थानी विषय में स्टेट टॉप करने पर राज्यपाल महोदय द्वारा गोल्ड मैडल से सम्मानित करने एवं महेशपाल सिंह गंगासरा के कनिष्ठ लेखाकार में चयन होने पर हार्दिक बधाई एवं उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएं।

महेशपाल सिंह गंगासरा

रूपसिंह परेऊ

-: शुभेच्छू :-

सांवत सिंह ऊंचाईडा, भगवान सिंह रावलगढ़, समुद्र सिंह आचिना, लक्ष्मण सिंह गुड़ानाल
उत्तम सिंह नाहर सिंह नगर, नरपत सिंह रामदेरिया, भैरु सिंह बेलवा, गेन सिंह चांदनी
हरि सिंह ढेलाना, मूलसिंह बेतिना, रघुवीर सिंह खिरजा, मदन सिंह आसकंद्रा
पाबू सिंह लवारन, प्रेम सिंह फतेहगढ़, भवानी सिंह पीलवा, जेठू सिंह सिड्ढा, लुणकरणसिह तेना,
पदम सिंह ओसिया, नरपत सिंह बस्तवा, करणीपाल सिंह गाँवडी, भैरु सिंह चाबा

सितम्बर, सन् 2024
वर्ष : 61, अंक : 09

समाचार पत्र पंजी.संख्या R.N.7127/60
डाक पंजीयन संख्या - Jaipur City /411/2023-25

संघशक्ति

ए-8, तारानगर, झोटवाड़ा,
जयपुर-302012
दूरभाष : 0141-2466353

E-mail : sanghshakti@gmail.com
Website : www.shrikys.org

श्रीमान् ....

....

....

श्री संघशक्तिप्रकाशन प्रन्यास (स्वत्वाधिकारी) के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक राजेन्द्र सिंह राठौड़ द्वारा भास्कर प्रिंटिंग प्रेस, डी बी कोर्प लिमिटेड, प्लोट नंबर-01, मंगलम कनक वाटिका के पीछे, प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना, रेल्वे क्रोसिंग के पास, बिलवा, शिवदासपुरा, टोंक रोड़, जयपुर (राजस्थान)-303903 (दूरभाष -6658888) से मुद्रित एवं ए-8, तारानगर, झोटवाड़ा, जयपुर- 302012 (दूरभाष- 2466353) से प्रकाशित। संपादक राजेंद्र सिंह राठौड़ । Email : sanghshakti@gmail-com | Website : www-shrikys-org